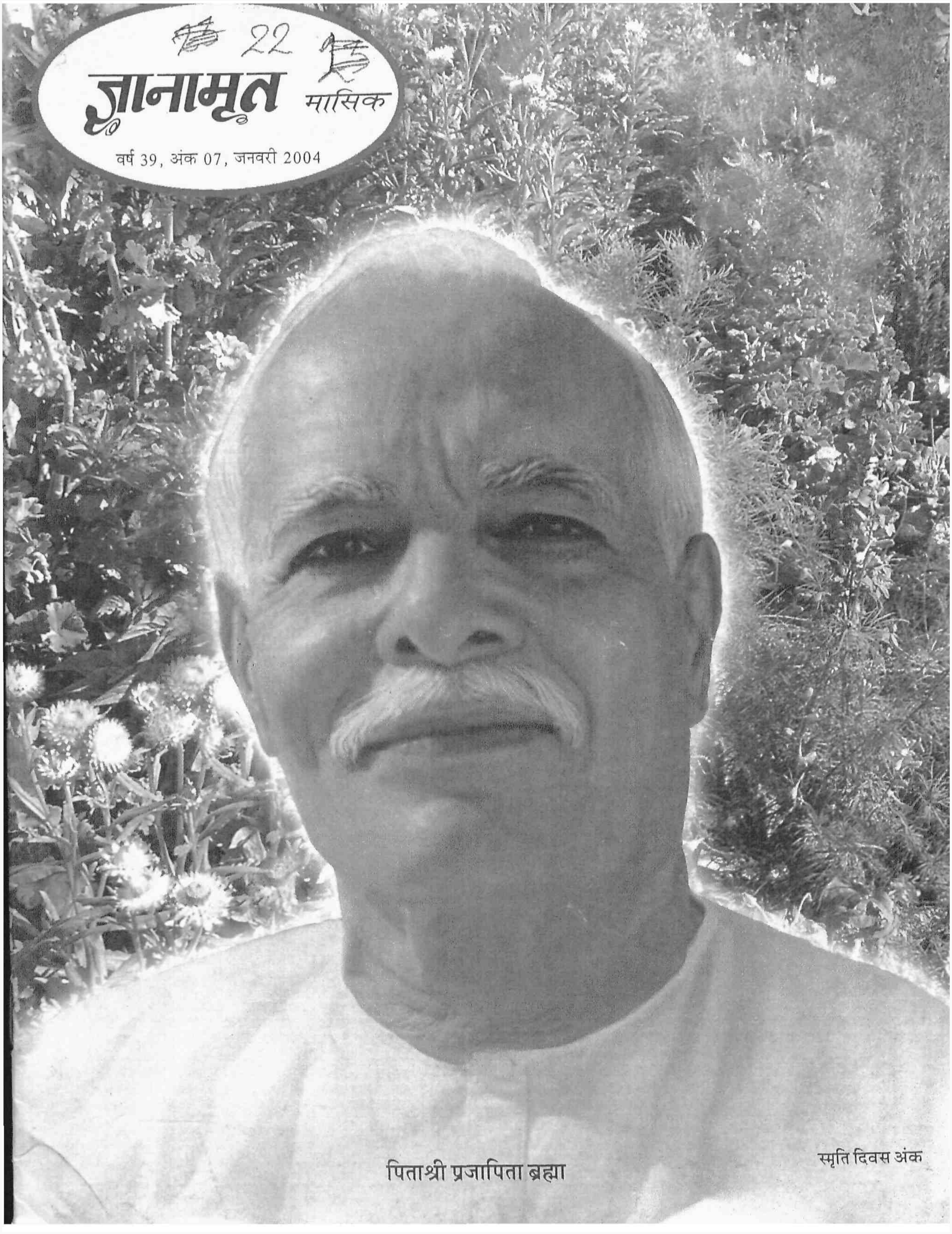
ज्ञानामृत मासिक

वर्ष 39, अंक 07, जनवरी 2004



पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा

स्मृति दिवस अंक











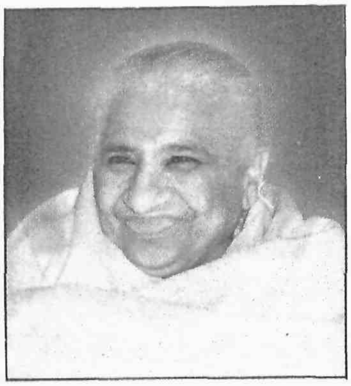






1. **मॉरिशियस**- मॉरिशियस के राष्ट्रपति भ्राता ए. जुगनाथ जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. चन्द्रा बहन। 2. **नांदेड (कैलाश नगर)**- केन्द्रीय रेलमन्त्री भ्राता नितीश कुमार जी को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुई ब्र.कु. शिवकन्या बहन। 3. **पीस पार्क (आबू पर्वत)**- गुजरात तथा राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता कैलाशपति मिश्र जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शशि बहन। साथ में हैं ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा भाई। 4. **नाहन**- हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता सदाशिव कोकजे जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरिता बहन। 5. **भुबनेश्वर**-उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता एम.एम. राजेन्द्रन जी के साथ ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु. लीना बहन तथा ब्र.कु. गीता बहन। 6. **जोरहाट**- आसाम कृषि विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता जी.एल. कौल, कृषि निदेशक भ्राता एम.एम. कालिता, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. सरला बहन तथा ब्र.कु. सत्यवती बहन, आध्यात्मिक कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद ईश्वरीय स्मृति में। 7. **रायपुर**-छत्तीसगढ़ के नवनिर्वाचित मुख्यमन्त्री डॉ. भ्राता रमन सिंह को बधाई देती हुई ब्र.कु. सविता बहन तथा ब्र.कु. उमा बहन। 8. **जयपुर**- राजस्थान की नवनिर्वाचित मुख्यमन्त्री बहन वसुन्धरा राजे सिन्धिया को ईश्वरीय सौगात तथा बधाई देते हुए ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. भूपाल भाई तथा अन्य।

नववर्ष के प्रति दादी जी का शुभ संदेश



विश्व कल्याणकारी, नवयुग के रचयिता, सर्व के गति-सद्गति दाता प्यारे शिव भोलानाथ बाबा के अति स्नेही, ज्ञान अमृत का पान कर अविनाशी, अमर भव के वरदानी, सर्व राजयोगी भाई-बहनें, ईश्वरीय मधुर याद के साथ, नवयुग के आगमन की शुभ वेला में, इस पुरानी दुनिया के नये वर्ष की कोटि-कोटि बधाइयाँ हों। मुबारक हो, मुबारक हो।

अब तो उस स्वर्णिम युग के वह सुनहरे दिन नज़रों के सामने आते जब हर आत्मा सर्व दुःखों, सर्व बंधनों से मुक्त हो, अपनी सतोप्रधान सुख स्वरूप स्थिति में स्थित होगी। इसी विश्व पर सम्पूर्ण श्रेष्ठाचारी देवी-देवताओं की अटल, अखण्ड, एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा वाली सुखदाई दुनिया होगी।

अब यह वही परिवर्तन की शुभ वेला है, जब हम सब अपने दृढ़ निश्चय और हिम्मत के शुभ संकल्पों से पुराने संस्कार-स्वभाव, चाल-चलन का परिवर्तन कर, स्व-परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन के इस महान कार्य में परमात्मा पिता के पूरे-पूरे मददगार बन, सच्चे-सच्चे खुदाई खिदमतगार बनते हैं।

उस नवयुग की तैयारी में ज्ञानामृत पीने वाले आप सभी ज्ञान-हंस क्या कर रहे हो? नवयुग रचयिता परमात्मा शिव की एक-एक शिक्षा को दिल में उतार रहे हो ना। प्राणों से भी प्यारे, सब के सहारे भोलानाथ शिव बाबा की मीठी शिक्षा है– **'मेरे लाडले बच्चो, अब मन के मालिक बनो, आप मन को चलाओ, मन आपको नहीं, कर्मेन्द्रियजीत बन स्व पर शासन करो, एक नयन में सुख और दूसरी में स्नेह समाकर आत्माओं के दुःख हरो। मन-वचन-कर्म में पूर्ण पवित्रता के कमल खिलाओ और चेहरे तथा चलन से खुशियों का खजाना बाँटो। ज्ञान, योग, धारणा तथा सेवा इन चारों ईश्वरीय विषयों में अनुभवीमूर्त बन भटकती आत्माओं को मंजिल दिखाओ। समाधान स्वरूप बन सर्व को ऊँचा उठाओ।'**

इस नए वर्ष में ईच वन टीच टेन (एक, दस को ज्ञान दे) का लक्ष्य रख गली-गली में शिव-सन्देश फैला दो। कोई कोना, कोई आत्मा बाकी न रह जाए। यही है, यही है, सुख-शान्ति का सच्चा मार्ग यही है - यह नारा देश-विदेश में हर नर-नारी के मुख से गूँज उठे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप ज्ञानमूर्त, प्रेममूर्त, शक्तिमूर्त आत्माएँ, इस नववर्ष में नई कमाल और स्वयं तथा अन्य को भाग्य-भण्डार से मालामाल अवश्य करेंगे। इन शुभकामनाओं के साथ आप सभी को नववर्ष की, नवयुग की, पुरुषार्थ में नवीनता तथा तीव्रता की बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

आपकी दैवी बहन

ब्र.कु. प्रकाशमणी

ब्र. कु . प्रकाशमणी

अमृत-सूची

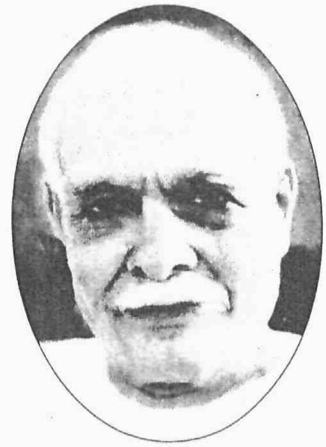
★★★

ज्ञानामृत पत्रिका के पाठक गण को नये वर्ष की शुभ बधाइयाँ।



संजय की कलम से –

ईश्वरीय सेवा के लिए बाबा की प्रेरणायें



सन् 1953 से लेकर 1969 के प्रारम्भ तक बाबा से साकार रूप में, ईश्वरीय सेवा के निमित्त जो प्राय: मिलन अथवा वार्तालाप होता, उससे विभिन्न प्रकार के अनुभवों का एक अतुल खजाना मिला। उसी का एक अनमोल मोती, बहन-भाइयों के लिए बाबा की प्रिय देन के रूप में यहाँ प्रस्तुत करता हूँ–

बात सन् 1955-56 की है। तब मुझे समाचार मिला कि दादी प्रकाशमणि जी, रत्नमोहिनी बहन और भाई आनन्द किशोर जी, विदेश सेवा के बाद अमुक तिथि को एक समुद्री जहाज से मद्रास बन्दरगाह पर लौट रहे हैं। उन दिनों जापान में हो रहे सम्मेलन से सम्बन्धित समस्त पत्राचार (Correspondence) और छपाई इत्यादि का कार्य बाबा ने मुझे सौंपा हुआ था। मैंने बाबा को लिखा - ''प्यारे बाबा, मेरा विचार है कि ज़ब ये बहन-भाई मद्रास में पहुँचें तब मद्रास में पत्रकार सम्मेलन (Press Conference) हो।'' उन दिनों यह यज्ञ कठोर आर्थिक कठिनाई के दौर में से गुजर रहा था परन्तु पत्र मिलते ही बाबा ने मुझे इसके लिए स्वीकृति की सूचना दे दी और मधुबन बुला लिया। मैं मधुबन पहुँचा तो बाबा को मालूम हुआ कि मेरे पास पर्याप्त वस्त्र ही नहीं हैं जो चार-पाँच दिन की लम्बी यात्रा लगातार कर सकूँ और वहाँ जाते ही, कपड़े धुलाये बिना, उस मौके को ठीक तरह से निभा सकूँ। परन्तु एक तो आर्थिक कठिनाई, दूसरा, अब तुरन्त तीन-चार जोड़े कहाँ से सिलवाऊँ? बाबा ने वस्त्रों के स्टॉक की संभाल रखने वाली बहन को निर्देश दिया कि वह पुराने कपड़ों के स्टॉक में से मेरे लिए कोई वस्त्र ढूँढ़े और मिल जाएं तो निकाल दे। उसने ऐसा ही किया। मेरे लिए दो सफेद पैन्ट निकाल दीं। वे पैन्ट मुझे बहुत छोटी थी, टखनों से भी ऊपर तक ही पहुँच पाती थी परन्तु जब बाबा ने मुझसे पूछा - ''बच्चे, वस्त्र ठीक हैं?'' परिस्थिति को देखते हुए तो मैंने कहा - ''हाँ, बाबा।'' वास्तव में मुझे पैन्ट पहनने का उभ्यास भी नहीं था। मैंने जीवन में केवल एक रात्रि को ही अपने एक बड़े भाई के विवाह के अवसर पर, अज्ञान काल में, उनके आग्रह पर पैन्ट पहनी थी। परन्तु ये अब बाबा ने दी थी इसीलिए इसी को वरदान मानकर स्वीकार किया। सोचा कि इसको पेट से काफी नीचे बाँध लूँगा। आबू से अहमदाबाद और फिर मुम्बई पहुँचा। वहाँ से जानकी बहन भी पत्रकार सम्मेलन करने मेरे साथ मद्रास गईं। वहाँ उनके एक लौकिक सम्बन्धी के यहाँ हम ठहरे जिनका निवास तत्कालीन मुख्यमन्त्री के बंगले के साथ वाली इमारत में ही था। अत: उनके सम्बन्ध से मुख्यमन्त्री के यहाँ ही हमने प्रैस वालों को फोन कर दिये कि आज अमुक समय पत्रकार सम्मेलन होगा और उन्हें पूछताछ के लिए वहीं का ही टेलीफोन नम्बर दे दिया। हम तो इस बात से अनभिज्ञ थे और हमने भोलेपन से ही वह नम्बर दे दिया था परन्तु सभी समाचारपत्रों के सम्वाददाताओं को तो यह मालूम था कि यह मुख्यमन्त्री के बंगले का फोन नम्बर है। हमने सम्मेलन के लिए सांयकाल का समय दिया था और जापान से आने वाले हमारे बहन-भाइयों ने प्रात: लगभग 10-11 बजे तक पहुँच जाना था परन्तु

शेष पृष्ठ....24 पर

सादगी और सद्गुणों के प्रणेता - ब्रह्मा बाबा

मानव स्वभाव ऐसा है कि वह सत्य परन्तु विचित्र बातों को सुनना पसन्द करता है। 'सत्य किन्तु विचित्र' शीर्षक से आज बहुत-सी बातें मीडिया द्वारा या दैनिक घटनाओं द्वारा भी मानव तक पहुँचती रहती हैं परन्तु वास्तव में वे उस स्तर की नहीं होती कि जिनको सुनने, देखने या जानकारी पाने से मानव का जीवन सत्य बन जाए, वह आश्चर्यानन्द से गद्‌गद हो उठे और उसका आध्यात्मिक जागरण होकर अलौकिक परिवर्तन हो जाए। मैंने अपने इस जीवन में जो अद्भुत और सम्पूर्ण सत्य, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के जीवन-चरित्रों के रूप में प्रकट होता देखा उससे न केवल जीवन को नई दिशा मिली बल्कि आचार-विचार में भी महापरिवर्तन आया और वर्णनातीत सुख की भी अनुभति हुई है।

इस सत्य किन्तु विचित्र कहानी का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ कि सन् 1936 के वैश्विक क्षितिज पर सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, धार्मिक, आध्यात्मिक मूल्यों के पतन के मंडराते हुए बादल काले और घने होने लगे थे। उन्हीं दिनों अविभाजित भारत के सिन्ध-हैदराबाद में दादा लेखराज नाम के प्रसिद्ध जवाहरी की भाव-भीनी भक्ति चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। उन्हें अनेक प्रकार के साक्षात्कार भक्ति के फल के रूप में अनायास ही होने लगे जिनमें उन्होंने परमपिता परमात्मा शिव, आत्मा के मूल स्वरूप, आत्मा के जन्म-पुनर्जन्म के चक्र, नई सतयुगी दुनिया की स्थापना, विज्ञान के विनाशकारी चमत्कार तथा विश्व परिवर्तन के लिए अवश्यंभावी भयंकर विनाशलीला को देखा। इनके फलस्वरूप उनके जीवन में अद्भुत, अविस्मरणीय और दिव्य परिवर्तन हुए। राजसी ठाठ-बाट में रहने वाले दादा लेखराज ने अपना सम्पूर्ण तन-मन-धन और सम्बन्ध जन-जन की आध्यात्मिक सेवा में लगा दिए। सबकुछ सामने होते हुए भी वे पूर्ण अनासक्त और निस्पृह हो गए। उनको अलौकिक नाम मिला प्रजापिता ब्रह्मा। भारत के शास्त्रों और पुराणों में वर्णित - असुर-वध अर्थ हड्डियाँ अर्पण करने वाले दधिची, मृत पूर्वजों को गंगाजल से पुनर्जीवित करने वाले भगीरथ, मोह को जीतने वाले मोहजीत राजा और सबकुछ होते हुए भी जीवनमुक्त स्थिति को प्राप्त करने वाले राजा जनक - ये सभी पात्र पिताश्री ब्रह्मा बाबा में जीवन्त हो उठे। ज्वालामुखी सदृश विकारों की आग उगलते विश्व को राहत देने के लिए वे शीतलमुखी बन गए तथा सच्चे अर्थों में सतयुग के प्रवर्तक और नई सृष्टि निर्माण के ईश्वरीय माध्यम बन गए।

परमात्मा पिता उनके मुख-कमल से नित्य नई ज्ञान-लहरियाँ प्रवाहित करने लगे जिनके बल से उनके अपने जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आए। इन विचित्र किन्तु सुखकारी, आह्लादकारी परिवर्तनों की गाथा यदि कलमबद्ध करने लगें तो कई पुस्तकें रची जाएँ। तूफान और बाढ़ से भी भयंकर आज के फैशन, दिखावे, देह की सजावट, झूठी शान आदि की बहती धारा को रोकने के लिए, गहन अन्धकार को चीरने वाले नक्षत्र की तरह, ब्रह्मा बाबा ने अपने परिवार, समाज और विश्व भर की अनेकानेक आत्माओं को सादगी, सच्चाई, सफाई और ऊँचे विचारों के पाठ पढ़ाए।

हमने साधु-संन्यासियों को आग की धूनी लगाते देखा है। वे आग को निरन्तर जलाए रखना और उसके सामने बैठे रहना ही तप मानते हैं परन्तु प्यारे ब्रह्मा बाबा ने तो शिव परमात्मा के प्रति एकनिष्ठ प्रेम और याद को

ही धूनी बना लिया। बुद्धि रूपी सूक्ष्म डोर को निरन्तर प्रियतम से जोड़े रखा। मरजीवा बनने के बाद, उनकी प्रीतबुद्धि बेमिसाल बन गई, वे अकेले रहे नहीं, अकेले कोई जीवन-क्रिया नहीं की, हर बात में, हर साँस में, हर कर्म में, शिव पिता के साथ कम्बाइन्ड (संयुक्त) हो गए।

जब देह रूपी वस्त्र का भान टूट जाता है और निरन्तर आत्म-स्थिति में टिक जाते हैं तो इच्छाएँ सिमटने लगती हैं और फिर इच्छा मात्रम् अविद्या स्थिति हो जाती है। प्यारे बाबा ने तन को तो पहले दिन से ही भगवान का रथ बना दिया, मन उनके स्मरण, मनन, चिन्तन में लगा दिया और धन भी अर्पण कर दिया। वे पहले दिन से ही इच्छा मात्रम् अविद्या हो गए। अब उन्हें आत्मा को ही सजाने, सँवारने और सम्पूर्ण बनाने की निरन्तर तात थी। इसलिए वे कहते थे - ''बच्चे! इस अन्तिम शरीर को कितनी चत्तियाँ लगी हैं, इसका क्या अभिमान करना। वस्त्र भी चत्तियों वाले पहनो तो देह अभिमान टूट जाए। तमोप्रधान तत्वों से बने इस पतित विकारी शरीर की सजावट में न जाना।'' सादगी तथा सत्यता ने उनके व्यक्तित्व को, साधारण तन होते हुए भी इतने तेज से भर दिया कि उनके प्रकम्पन चुम्बक की तरह जाने-अनजाने सभी को आकर्षित करते थे। जैसे गुड़ को धारण करने वाली थैली भी मीठी हो जाती है, उसी प्रकार, प्यारे शिव बाबा को अपने शरीर-रथ के निरन्तर सारथी बनाकर ब्रह्मा बाबा भी उनके समान बन गए। उनकी रूहानी दृष्टि से दोनों पिताओं की छवि झाँकती थी, उनका एक-एक बोल भाग्य की लकीरों को दीर्घ करते हुए अमिट बन जाता था।

प्यारे बाबा स्वागत आदि के लिए बहुत फूलों आदि को लाने से भी मना करते थे। वे कहा करते थे कि प्रकृति भी प्रभु की बेटी है, उससे भी अनावश्यक क्यों लिया जाए? जितना कम लेंगे उतना यह अब भी और सतयुग में भी सेवक बनकर खूब सुख देगी। यहाँ तो मानव प्राप्तियों की इच्छा करते हैं परन्तु सतयुग में सर्व प्राप्तियाँ दैवी मानव की सेवा को तरसेंगी, तत्पर रहेंगी कि कब हमारा मालिक हमारा उपभोग करे।

बाबा सदा मितव्ययता की ओर ध्यान खिंचवाते थे। वे कहते थे कि अपने भोजन पर अधिक खर्च नहीं करना चाहिए। जब दाल सस्ती हो तो उसका उपयोग करो और जब सब्जी सस्ती हो तो उसका प्रयोग करो। प्यारा बाबा किसी भी ऊँची कीमत की चीज को अपने लिए स्वीकार नहीं करते थे। उनका मन तो सदा सतयुगी नई दुनिया के सतोप्रधान नजारों और सतोप्रधान चीजों में ही रमण करता था। यहाँ की कोई भी चीज वे नई मानते ही नहीं थे क्योंकि जिन तत्वों से वे बनी हैं वे तो पुराने ही है। कई बच्चे बाबा के लिए इस भावना से कि भगवान का रथ हमारी दी वस्तु का उपभोग करे, बढ़िया शॉल या स्वेटर या अन्य सौगातें ले आते थे। बाबा उन्हें तुरन्त निमित्त बहन को दे देते थे। फिर जब कोई अन्य वत्स उनसे मिलने आता तो वे उस रखी हुई सौगात को बड़े प्यार से देते थे ताकि उस वस्तु के निमित्त उसे प्यारे शिव बाबा की स्मृति बनी रहे।

प्यारे बाबा इतनी आयु में भी बच्चों के साथ टाट पर बैठकर भोजन करते थे। एक बार उनकी अनुपस्थिति में उनके तकिए को नया कवर चढ़ा दिया गया तो बाबा ने तुरन्त पहचान लिया और उसे उतरवा दिया। वे कहते थे कि जब प्यारे शिव बाबा भी अन्तिम, पुराने, चौरासिवें शरीर का ही आधार लेते हैं तो मैं उनका रथ भी उनका अनुकरण करता हूँ। हाँ, हर नई सुन्दर वस्तु बच्चों को या अन्यों को देकर उन्हें खुशी मिलती थी। ब्राह्मण वत्सों को सर्व प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध करवाकर बाबा

स्वयं सदा एक छोटे-से पुराने कमरे में ही निवास करते रहे। यह देख कई वत्स कहते - ''बाबा, आप भी नए भवन के किसी कमरे में निवास कीजिए, हम नए का सुख भोगें और आप पुराने में ही रहें, ऐसा हमारा मन नहीं मानता।'' तब बाबा कहते - ''बच्चो, शिव बाबा तो आते ही हैं पुरानी दुनिया में और पुराने शरीर रूपी रथ में। नई सतयुगी दुनिया भी आप बच्चों के लिए ही बनाते हैं। बाप आप बच्चों को ही नए भवन में देख खुश होते हैं। बाप तो सारी सृष्टि के रूहानी सेवक हैं, सर्व को मानव से देवता बनाने की सेवा पर तत्पर हैं अत: बच्चे, सेवक का तो ऐसे ही कमरे में रहना ठीक है।'' प्यारे बाबा के मुख से ऐसे निरहंकारी बोल सुन सभी मूक हो जाते। वे बाबा की मान-मनुहार करते हुए भी अन्दर से जानते थे कि वे बाबा को अपनी बात जँचा नहीं पाएँगे। प्यारे बाबा की त्याग भावना और तपस्या की दृढ़ता के सामने सभी वत्स नतमस्तक हो जाते। बाबा का हाथ सदा देने की मुद्रा में ही रहता। वे सांसारिक सुख-सुविधाओं के प्रति सदा बेपरवाह ही थे। तपस्या के प्रकम्पनों से भरपूर आज भी उनका कमरा वत्सों और नवागन्तुकों के लिए प्रेरणाएँ लुटाता रहता है। हरेक को, आकारी स्वरूप में उनकी वहाँ उपस्थिति का अहसास होता है। वहाँ बैठने वाला या झाँकने वाला चन्द क्षणों में ही गहन शान्ति, प्रेम, पवित्रता तथा शक्ति से भरपूर हो जाता है।

जिस भवन की नींव जितनी गहरी होती है वह उतना ही अधिक टिकाऊ होता है। आदिदेव प्रजापिता ब्रह्मा ने, परमात्मा के बाद दूसरे नम्बर की आत्मा ने अपने हड्डी त्याग और तप से विद्यालय की नींव को इतना गहरा कर दिया कि उनके सामने या उनके अव्यक्त होने के बाद आए बड़े-से-बड़े विरोध के तूफान भी इसे हिला न सके। बाबा ने त्याग और तप की आहुतियाँ अकेले नहीं डाली वरन् हजारों बच्चों से भी डलवाई। पिताश्री ने सम्पूर्ण विश्व को, परमात्मा शिव की शिक्षाओं द्वारा रामराज्य में परिवर्तित करने की जो संकल्पना की थी, जो साक्षात्कार किया था वह शनै:-शनै: साकार रूप धारण करती जा रही है। ऐसे द्रष्टा, त्याग और तप के दृढ़ स्तम्भ, दिव्य-बुद्धि सम्पन्न, मानव जाति के आदिपिता प्रजापिता ब्रह्मा को उनकी 34वीं पुण्यतिथि पर शत-शत नमन।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

आजा एक बार

– ब्र.कु.राजवीर, बड़ौत

बन के फ़रिश्ता उड़ गये बाबा तुम तो गगन के पार,
लेकिन तुम बिन बिल्कुल खाली हो गया ये संसार,
फिर से आजा एक बार, आजा, आजा एक बार....
जितना भुलायें ज़्यादा ही आयें हमको तेरी यादें,
आज तो सन्मुख आकर सुन ले बच्चों की फरियादें,
सबके दिल हैं बेकरार, उन्हें देने को करार,
आजा, आजा एक बार......
साथ रहेंगे, साथ चलेंगे वायदा भूल न जाना,
अपने जैसा हमें बनाने, पड़ेगा तुमको आना,
तेरा पाने को दीदार, राह तकते नयन हज़ार,
आजा, आजा एक बार......
बहुत हैं वो जो तेरी बाहों का झूला झूल न पाये,
ऐसा करो उपाय कि सबको ये अवसर मिल जाये,
कब से मांग रहे हकदार, तेरे प्यार का उपहार
आजा, आजा एक बार......

प्रभु पालना के अनोखे नजारे



निराकार परमात्मा शिव ने साकार ब्रह्मा के तन का आधार ले जब दृष्टि से वरदानों की वृष्टि की तो उससे पहले-पहले लाभ लेने वालों में दादी बृजशान्ता भी थी। आप पदमापदम भाग्यशाली आत्मा ने यज्ञ के प्रारम्भिक 14 वर्षों की अखण्ड तपस्चर्या में निज जीवन को तपाया और कुन्दन बनाया। आपने बापदादा के चुम्बकीय आकर्षण में बंध, क्षण भर में जीवन को बलिहार कर दिया। वर्तमान समय आप निमित्त पूना की धरनी पर ज्ञान-गंगा प्रवाहित कर रही हैं। वैसे तो भारत का कोना-कोना आप द्वारा की गई सेवाओं से लाभान्वित हो चुका है। सादगी तथा सत्यता की आप मूरत हैं तथा बापदादा की प्रत्यक्षता की लगन तथा यज्ञ के प्रति ईमानदारी और वफादारी आपकी रग-रग में समाई है। सात दशक के ईश्वरीय जीवन के विस्तृत अनुभवों को चन्द शब्दों में समा कर आप पाठकों को अतीन्द्रिय आनन्द का रसास्वादन करा रही हैं।

—सम्पादक

मेरा जन्म हैदराबाद सिन्ध में सन् 1923 में भक्ति-भाव वाले कुलीन और धनी परिवार में हुआ। बचपन में ही भक्ति और पूजा के प्रति मेरी रुचि थी और गीता, रामायण, महाभारत, भागवत आदि पढ़ने का बहुत शौक था। पारिवारिक पालना में स्थूल साधनों की कोई कमी नहीं थी लेकिन भगवान का डर हमेशा मन में रहता था। मेरी लौकिक बहन हरदेवी, बड़ी दीदी मनमोहिनी तथा क्वीन मदर (चाची जी) ॐ मण्डली में जाती थीं। एक दिन चाची जी मुझे भी ॐ मण्डली में ले गई। वहाँ जाकर ऐसा दिव्य अनुभव हुआ जो जीवन का नया अध्याय खुल गया। बाबा की दिव्य दृष्टि मिलते ही जीवन में महा परिवर्तन आ गया। बाबा ने बड़े प्यार से कहा - ''बेटा! तुम कौन हो ? तुम शरीर से अलग आत्मा हो और निराकार ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा की सन्तान हो, अब देवलोक में चलना है, यह पुरानी नरक की दुनिया है, अब चलो निज देश में।'' बस, मुझे ईश्वरीय जादू लग गया और मेरी रूहानी पढ़ाई शुरू हो गई। बाबा कहते थे - ''राजयोगियों के आगे बड़े-बड़े राजा और राजनीतिज्ञ भी झुककर सलाम करते हैं, वन्दना करते हैं, बच्चे, तुम तो विश्व के मालिक के बालक हो, तुम तो त्रिकालदर्शी, त्रिमूर्ति बेहद बाप के बच्चे मास्टर त्रिकालदर्शी हो।'' यह सब सुनते-सुनते हमारी लौकिक सुध खो गई और मौलाई मस्ती चढ़ गई। उस समय मेरी आयु मात्र 13 वर्ष थी। ॐ राधे (सरस्वती माँ) ने मेरी ईश्वरीय पढ़ाई का कोर्स शुरू किया। मम्मा हम सभी 22 कुमारियों को विशेष शिक्षाएँ देती थीं। रोज शाम को आध्यात्मिक गीत सिखाती थीं तथा ॐ की मधुर मुरली सुना-सुना कर इस शरीर से परे कहीं दूर-दूर ले जाती थीं। एक-दो बार तो ऐसा भी हुआ कि सारी क्लास ध्यान में चली गई और मम्मा को यहाँ नहीं बल्कि स्वर्ग की राधा के रूप में देख रास रचाने लगी। बाबा ब्रह्मा (दादा लेखराज) अलग भवन (ॐ निवास) में रहते थे, वे भी पहुँच जाते थे और स्वर्ग का रासमंडल बन जाता था। बाबा फिर जल्दी ध्यान से ज्ञान की अवस्था में ले आते थे। ऐसी अलौकिक पालना मिलने से सारा दिन बहुत ऊँचे विचार मन में चलने शुरू हो गए। बुद्धि का ताला खुल गया। यही सोच चलता था कि मैंने

ऐसे क्या पुण्य किये जो स्वयं भगवान मिल गए। लौकिक जीवन में धन आदि का जो भी नशा था सब उतर गया। ऐसे लगता था कि स्थूल दौलत रूहानी प्राप्ति के आगे मिट्टी के समान है। जीवन में अतीन्द्रिय सुख महसूस होने लगा। बाजार के रजोगुणी खान-पान से बुद्धि निकल गई। पहनावा सादा हो गया। अब तो यही तात लग गई कि सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्तियाँ जीवन में धारण करनी हैं। पाँचों विकार जैसे छूटते गए और देवताई गुणों की धारणा होने लगी। 'मुझे नर से नारायण बनना है, मैं बेहद के बाप की बेटी हूँ, मुझे सभी हदों से परे जाना है, ये विश्व मेरा घर है, मैं आत्मा हूँ, मैं ॐ हूँ, यह सारा हमारा मण्डल है, कोई मेरा अलग घर नहीं, जैसा बाप है वैसे ही बच्चे के संस्कार चाहिएँ, बाबा के महावाक्यों को साकार करना है' - इन्हीं सब विचारों का चिन्तन होने लगा।

इसके बाद लौकिक परिवार में पिता और दादे का बन्धन आना शुरू हुआ। लौकिक माँ तो इस ज्ञान में थी। तन को ये लोग ताले में डालने लगे पर मुझे तो मीरा जैसी मस्ती चढ़ी थी इसलिए ये बन्धन भी आगे बढ़ाने वाले तोहफे ही महसूस होने लगे। रूहानी पढ़ाई चलती रही। बाबा कहते थे - ''मनुष्य जब आरती करते हैं तो कहते हैं कि विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा लेकिन वास्तव में वे भगवान के आगे झूठ बोलते हैं। तुम को तो सच में विषय-विकार मिटाने हैं।'' इसके बाद मेरा बाबा के साथ कराची में जाना हुआ। बन्धन मुक्त हो फरिश्तों जैसा जीवन व्यतीत करने लगे। ऐसे महसूस होता रहा कि लौकिक बाप ने तो सिर्फ जन्म दिया, पढ़ाया पर इस अलौकिक बाप ने तो जीवन का एक-एक क्षण अनमोल बना दिया। आयु छोटी होने के कारण लौकिक पिता वारंट के द्वारा मुझे वापस हैदराबाद ले आया पर मुझे महसूस हुआ कि मैं मोती चुगने वाला हँस हूँ, मुझे तो विजयी बनना है और मैं ज्ञान-योग के बल से मोह की जंजीरों को तोड़ कर वापस ईश्वरीय परिवार में आ गई। बाबा दिन-रात माया (5 विकारों) पर विजय प्राप्त कराकर जगतजीत बनने की शिक्षाएँ देते थे। बाबा कहते थे - ''बच्चे, तुम मैदान पर रुस्तम बन खड़े हो तो माया भी रुस्तम रूप में आएगी पर सदा ईश्वरीय याद में रहते विजयी बनो।'' हमें अनुभव हो गया कि हम ही पूज्य देवता थे, हम ही पुजारी बने हैं। अब हमें ही पावन बनना है। यह अहसास भी खो गया कि हम इस दुनिया में हैं या किसी और दुनिया में।

बाबा की पालना हमें कैसे मिली

बाबा सदा 'आओ बच्ची', 'मीठी बच्ची' इसके सिवाय और कोई शब्द ही नहीं कहता था। इतना बुजुर्ग बाबा हम बच्चों से सब प्रकार के खेल भी खेलता था। कभी क्रिकेट, कभी बास्केट बॉल, कभी टग ऑफ वॉर, कभी वॉलीबॉल, कभी फुटबॉल आदि सब खेल कराते थे। दो पार्टी बन जाती थी, एक मम्मा की और एक बाबा की। फिर हम टग ऑफ वॉर का खेल करते थे। बाबा को, मम्मा को हराने में बड़ा मज़ा आता था। हम सब खूब हँसते थे, नाचते थे क्योंकि विद्यार्थी जीवन सबसे उत्तम है।

बाबा ने सदा सिखाया कि तुम शिवशक्ति हो, तुम ही काली, दुर्गा हो। बाबा ने हम को पुरुषत्व के भान में स्थित रहने के लिए कहा। कपड़े भी भाइयों जैसे पहनाए जिससे यह भान पक्का हो गया कि हम नारी नहीं बल्कि पुरुष हैं अथवा हम आत्मा हैं, स्त्री और पुरुष के भान से परे हैं।

बाबा को स्वच्छता बहुत पसंद थी। एक बार बाबा रात को चक्कर लगाने आए तो हम सब दौड़ कर उनके पास पहुँचे। हम बाबा के सामने पट पर बैठ जाते थे। बाबा ने कहा - ''बच्चे, टाँगें सीधी करके बैठो'' बाबा

हम सभी के पाँव देखना चाहते थे कि कहीं गंदे तो नहीं हैं। बाबा ने कहा - ''देवताओं के पाँव पूजे जाते हैं।'' बस, उस दिन के बाद हमने कभी पाँव गन्दे नहीं रखे। बाबा कहते थे कि रात को जब सोते हो तो आत्मा रूपी सजनी परमात्मा साजन के पास जाती है इसलिए रात को गन्दे कपड़ों में नहीं सो जाओ। उस समय से लेकर हमारा हमेशा स्वच्छ होकर सोना प्रारम्भ हो गया। बाबा कोई भी इशारा व्यवहारिक रूप में और बड़े प्यार से देते थे। एक बार बाबा ने यज्ञ के हर कार्य के लिए दिशा निर्देश देने की जिम्मेवारी स्वयं सम्भाली और एक छोटी बच्ची को अपना साथी बना कर रखा। वह छोटी बच्ची बड़े-बड़े महारथियों को आकर कहती थी कि आज आपको यज्ञ का यह कार्य करना है। कोई भी ना नहीं कर सकता था क्योंकि बच्ची के द्वारा बाबा का आदेश मिल रहा था। बाबा ने यह युक्ति बच्चों का देहाभिमान तोड़ने के लिए रची थी। प्यारे बाबा कहते थे कि बच्चे, माँगने से मरना भला। बाबा ने यज्ञ चलाने की ऐसी विधि रखी जो हमें कभी भी कुछ भी माँगना न पड़े। पन्द्रह बहनों के एक समूह के ऊपर एक बहन को नियुक्त किया गया। वह हर सप्ताह पूछती थी कि किसी को साबुन, ब्रश, तेल, चप्पल आदि क्या चाहिये। सूची अनुसार हर चीज अलमारी में अपने आप रखी जाती थी। हम पूछते थे कि बाबा अगर चप्पल टूट जाए तो फिर तो माँगना पड़ेगा ना। इस पर बाबा हँस कर कहते थे कि देने वाली निमित्त बहन के आगे जाकर नंगे पाँव घूमो तो वह आप से स्वयं पूछेगी। बाबा छोटी-बड़ी सब बातों का मार्गदर्शन देते थे।

कभी बच्चों को संकल्प-विकल्प आदि बहुत चलते थे तो बाबा सोचते थे कि बच्चे अन्दर से निर्बल न बन जायँ इसलिए मुरली में कहते थे - ''बच्चे, बाबा को रात को बहुत बुरा संकल्प आया, बाबा की नींद फिट गई, अरे! बाबा तो सबसे आगे है तो तूफान भी तो इनको बहुत आएँगे।'' ऐसे कहते हुए बच्चों को हल्का कर देते थे।

जब कोई कहता था कि बाबा, आज आप ने मुझ को मुरली में सावधानी दी तो बाबा कहते थे - ''बच्चे, बाबा को याद थोड़े ही रहता है कि तुम्हारे ऊपर वाणी चलानी है। बाबा तो सागर है। सागर कचरा बाहर निकाल देता है।'' ऐसा कहकर बच्चों को हल्का कर देते थे।

बच्चे, बूढ़े, ऊँच कुल या साधारण कुल के जो भी बाबा के पास आते, बाबा सदा उनको आत्मिक दृष्टि से देख उत्साह दिलाते। बाबा छोटे बच्चों में भी विश्वास रख कहते थे कि ये बच्चे भी शिव बाबा को याद करते रहें तो ऊँच पद पा सकते हैं। जयन्ती बहन बाबा के पास लंदन से आई थी। बाबा ने सारी वाणी उसको देख चलाई कि यह बच्ची बहुत सेवा कर सकती है। यह लंदन के राज्याध्यक्ष को भी संदेश दे सकती है। ऐसे-ऐसे उमंग दिलाया। बाबा के वरदानों से पली जयन्ती बहन आज विश्व के कोने-कोने में बाबा का संदेश देती रहती है।

एक बार गुड़गाँव के पास के गाँव की बहुत बूढ़ी-बूढ़ी माताएँ बाबा के पास आई थीं। कमाल है बाबा की, कितना उनको हँसाया, रास कराया। बाबा बोले - ''ये बाबा की हमजिन्स हैं।'' फिर कितना उनको सराहा कि देखो ये बच्चियाँ सुदामा की तरह दाल-चावल की मुट्ठी लाई हैं, अपना भाग्य ऊँच बना रही हैं। कमाल है बाबा की, जो हर आत्मा को सम्मान देते रहे।

एक बार जब भारत और चीन के बीच जबरदस्त लड़ाई लगी थी तो रहमदिल बाबा ने मुरली में कह दिया कि मुफ्त में इतने बच्चे मर रहे हैं, यह टुकड़ा दे देना चाहिए। यह मुरली बाहर के लोगों के हाथ लगी। उन्होंने सोचा कि यह तो भारत के विरोध में है। सेना के अधिकारी, पार्टी

बनाकर आबू में बाबा से मिलने आए। बाबा उनसे मिले। पहले तो बच्चे-बच्चे कहकर प्यार से बात की और बताया कि मुरली चलाने वाला बाबा ऊपर से आता है और मेरे द्वारा बोलकर चला जाता है। फिर बाबा ने कहा कि बच्ची, वे अच्छे-अच्छे आम लाओ और बच्चों को खिलाओ। बाबा के ऐसे स्नेह भरे व्यवहार को देख कर वे बाबा के स्नेह में डूब गए और जिस बात के लिए आए थे वह उनके मन से निकल गई। प्यारे बाबा ने कभी भी बच्चों को आदेश नहीं दिए, खुद हर कार्य करके दिखाया। कभी सब्जियों का ढेर दिन के समय आ जाता था तो बाबा खुद सब्जी काटने बैठ जाते थे। हवा की तरह यह खबर चारों और फैल जाती थी और सारे बच्चे निद्रा को छोड़ कर सब्जी काटने आ जाते थे।

यज्ञ में पहले-पहले गौएं बहुत थीं। बाबा ने सोचा कि गोबर का सदुपयोग होना चाहिए। उस समय जो कोयले जलते थे उनका चूरा बच जाता था। एक बार बाबा चूरे और गोबर को मिलाकर गोले बनाने लगे ताकि वे जलाने के काम आ सकें। किसी ने मम्मा को जाकर सुनाया कि देखो बाबा क्या कर रहे हैं। मम्मा आई तो पीछे-पीछे सारी शक्ति सेना भी आ गई। घण्टे का कार्य मिनटों में पूरा हो गया। बाबा कार्य करते-कराते रूहानी दृष्टि-वृत्ति से देखते थे। वे कहते थे कि यह हम स्वर्ग का गोला बना रहे हैं। बच्चों का देह अभिमान एक सेकण्ड में टूट जाता था। कराची में चार-चार मण पापड़ बनाते थे पर बाबा पहले आकर बैठते थे, फिर तो कोई बच्चा वहाँ से हिल नहीं सकता था।

बाबा ने खुद मालिक होते हुए भी नम्बर वन विद्यार्थी का पार्ट बजाया। उन पर हमारा इतना विश्वास था और है जो हम कहते हैं कि अगर बाबा कहे कि तुम डूब जाओ तो मैं यही समझूँगी कि इस में भी मेरा कल्याण है। इतना ही विश्वास बाबा का भी हम बच्चों पर है। इस विश्वास ने ही नष्टोमोहा बनाया।

एक बार बाबा मुम्बई में ऑपरेशन के लिए आए थे। ऑपरेशन कक्ष में जाने से दो मिनट पहले बाबा ने हमें पत्र लिखा कि बच्ची, बाबा अभी-अभी वापस आकर बच्चों से मिलता है, बाबा ठीक है।

जब कोई बीमार हो जाता था तो बाबा कहते थे कि हॉस्पिटल में जब डाक्टर आपको देखने आए तो उसको भी रूहानी दृष्टि का दान दो और अपनी हर्षित अवस्था से साबित करो कि आप बीमार नहीं हैं। डाक्टर पर आपका रूहानी प्रभाव पड़ना चाहिए।

बाबा यह भी कहते थे कि पहरा देने वाला इतना याद के नशे में रहे जो उसको देख कर, अन्दर आने वाला हर व्यक्ति अपनी देह को भूल जाए। वह कहे कि जब पहरेदार ही ऐसा है तो अन्दर क्या होगा। बाबा कहते थे कि किले की हर दीवार इतनी मजबूत हो जो आने से ही हर व्यक्ति पर रूहानियत का रंग चढ़ जाए। ▲

निश्चय बुद्धि

निश्चयात्मक बुद्धि होने का अर्थ यह अन्ध-विश्वास नहीं है कि जो भी हम सुनें उसे आँख मूंद कर मान लें। यह तो और भी खतरनाक मनोवृत्ति है जो हमें पतन के गर्त में गिरा देगी। वस्तुतः संशय और अन्धविश्वास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और आत्मा की तमोगुणी वृत्ति के प्रतीक हैं। प्रत्येक व्यक्ति और सिद्धांत को हमें विवेक और अनुभूति के तराजू पर पूरा तोलना चाहिए। कसौटी पर जो खरा उतरे उस सिद्धांत के लिए हमें जीवन की पूरी बाजी भी लगा देनी चाहिए। तभी हम कुछ प्राप्ति कर सकते हैं।

परमात्मा के दिव्य चरित्र और लीलाएँ



ब्र.कु. राजेश्वर भाई सन् 1984 तक उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के सचिवालय में सेवारत रहे हैं। जापान में हुए ''द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन'' से सम्बन्धित एक पत्रिका पढ़कर पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा से आपका सम्पर्क हुआ। इसके उपरान्त आप युगल सहित ईश्वरीय मार्ग पर अग्रसर हुए और बापदादा तथा श्री मातेश्वरी जी के अलौकिक मार्गदर्शन में अनेक विशिष्ट सेवा-कार्यों को साकार करने के निमित्त बने। सन् 1961 में बापदादा की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश के राजभवन में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी तथा सेमिनार का सफल आयोजन आपके द्वारा हुआ। सन् 1985 में सेवा-निवृत्त होने पर निजी आवास में गीता पाठशाला के माध्यम से ईश्वरीय सेवा में संलग्न हैं। आपने साकार बाबा से जो प्यार पाया उसकी गूँज आपके दिव्य अनुभवों में स्पष्ट झलकती है। उस गूँज से पाठकों के भी दिल-दिमाग को गुँजित करने के लक्ष्य से आपने उनको कलमबद्ध किया है।

—सम्पादक

परमात्मा के दिव्य चरित्र व अलौकिक लीलाओं का वर्णन जब संसार में कहीं भी सुनता या पढ़ता था तो मेरा मन भाव- विभोर हो जाता था। मैं सोचता था कि कौन-सी थीं वे भाग्यशाली आँखें जिन्होंने परमात्मा की दिव्य लीलाओं को निहार कर बुद्धि रूपी कैमरे में बन्द कर लिया और जिनका स्पर्श करके मतवाला मन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता रहा।

भविष्य नितान्त अदृश्य है, अलक्षित है। कोई नहीं जानता कि भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है। मैं सोच भी नहीं सकता था कि एक दिन मैं सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा और साकार प्रजापिता ब्रह्मा से साकार रूप में मिलूँगा। अपने भाग्य की किन शब्दों में सराहना करूँ जो मैंने मधुबन में बापदादा, मीठी मैया और बड़ी दादी-दीदियों के साथ कई-कई दिन रहकर, गोप-गोपियों और गोपी वल्लभ के अलौकिक कर्त्तव्य व दिव्य लीलाओं को इन नेत्रों से देखा है और बुद्धि से उनका रसपान करके अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया है।

सन् 1955 के जनवरी मास की बात है। मैं उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम डॉ.के.एम.मुन्शी के निजी स्टाफ में सेवा पर था। वे विद्वान होने के साथ सुप्रसिद्ध लेखक भी थे। देश-विदेश से अनेक पुस्तकें उनके पास आती रहती थीं। हम उन्हें रजिस्टर में चढ़ाकर पुस्तकालय में लगा देते थे। राज्यपाल जी के अतिरिक्त स्टाफ-सदस्य भी पुस्तकालय में जाकर पुस्तकों का अध्ययन करते थे। एक दिन मेरी नज़र एक पुस्तक पर पड़ी जो जापान से आई थी। जापान में एक धार्मिक सम्मेलन हुआ था जिसमें विश्व के सभी धर्म-नेताओं ने परमात्म अवतरण (Coming of the World Saviour) पर अपने विचार प्रस्तुत किये थे। उन्हीं विचारों का संकलन था इस पुस्तक में। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से दादी प्रकाशमणि जी तथा दादी रतन मोहिनी जी के प्रवचनों में बताया गया था कि परमात्मा का अवतरण हो चुका है और वे अपना दिव्य कार्य कर रहे हैं। बहनों के विचार पढ़कर मुझे बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। मैंने फौरन पुस्तक में दिये गये पते पर ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा और उत्तर में तुरन्त ही बाबा ने लखनऊ सेवाकेन्द्र का पता

लिखकर भेजा। मैंने नित्य प्रति सेवाकेन्द्र पर क्लास करना प्रारम्भ कर दिया। उस समय ज्ञान का इतना विस्तार नहीं था केवल दो ही चित्र थे, एक में त्रिमूर्ति और गोला तथा दूसरे में कल्प वृक्ष था। योग पर विशेष ध्यान दिया जाता था। मेरा मन मानव तन में आये परमात्मा से मिलने को छटपटा रहा था और कुछ ही महीनों बाद एक दिन ऐसा कि जब मैं बाबा से मिलने मधुबन रवाना हो गया।

ब्रह्मा बाबा से पहली बार मैं जून 1955 में मिला। तब तक ब्रह्मा और ब्रह्मावत्स पाण्डव भवन में नहीं आये थे तथा एक अन्य कोठी (बृज कोठी) में निवास करते थे। गुलजार दादी लखनऊ में हमारी राजयोग शिक्षिका थीं। उन्होंने बाबा से मेरा परिचय कराया। बाबा को देखा तो आँखें उनकी मनमोहिनी मूर्ति को देखती रह गईं। उनसे दृष्टि लेते ही आत्मा आनन्द विभोर हो गई। मन बिल्कुल मौन हो गया। थोड़ी देर नज़र से निहाल करने के बाद बाबा ने पूछा - ''बच्चे ! बाबा से पहली बार मिलने आये हो?'' ''5000 वर्ष पहले आपसे मिले थे, इस जन्म में आपको ढूँढ़ रहे थे सो आज पा लिया'' मैंने उत्तर दिया। बाबा ने प्यार से गोदी में लिटा लिया, माथा थपथपाया, ज्ञान की लोरी दी फिर स्थूल टोली खिलाई। दोपहर का खाना रोज बाबा-मम्मा के साथ खाते। पहले बाबा और फिर मम्मा सब बच्चों को गिट्टी (ग्रास) खिलाते। उन दोनों के वरद हस्तों से गिट्टी खाने में जो खुशी होती थी वह वर्णन से परे है।

प्रात: क्लास में जब बाबा महावाक्य सुनाते तो मुझे बड़े विचित्र अनुभव होते। जैसे ही शिव बाबा की प्रवेशता होती, बाबा के मस्तक पर सूर्य जैसी चमक फैल जाती और आवाज भी बदल जाती। बीच-बीच में ब्रह्मा बाबा साधारण-सा दिखाई देता, पुन: वही अलौकिक आभा देदीप्यमान हो जाती। मैं अपनी आँखें बार-बार मलता, सोचता कि मेरी आँखों का धोखा न हो परन्तु यह धोखा नहीं था। जब बड़ी दादियों को यह बात बताई तो उन्होंने समझाया कि कैसे शिव बाबा इस तन में आता और जाता है। बीच-बीच में ब्रह्मा भी मुरली चलाता है।

एक बुजुर्ग माता थी। श्री कृष्ण की परम भक्तिन थी। सदा विचारों में खोई रहती थी। उसे ब्रह्मा बाबा में श्री कृष्ण नजर आता, तो वह बाबा को पकड़ कर कहती - ''देख, क्यों छेड़ रहा है मुझे, बार-बार भाग जाता है, आ मैंने तेरे लिए माखन रखा है।'' वह माता हर समय नारायणी नशे में चूर रहती थी और यज्ञ-सेवा करते, सब्जी आदि काटते श्री कृष्ण को याद करती रहती थी।

उस समय साकार ब्रह्मा द्वारा कई लोगों को अनेक प्रकार के साक्षात्कार होते थे। किसी को शिव के ज्योतिर्मय रूप का, किसी को श्री कृष्ण का, किसी को नारायण का, किसी को विष्णु चतुर्भुज का, किसी को स्वर्ग के स्वर्णिम दृश्यों का और किसी को विनाश का साक्षात्कार होता था। फलस्वरूप, वातावरण में रास की मस्ती छा जाती थी। प्रेम सागर का अलौकिक प्रेम-रस पीकर आत्मायें आत्म-विभोर हो खुशी में रास करने लगती। भागवत में रासलीला का केवल वर्णन पढ़ा था परन्तु उसका साकार दृश्य अब इन आँखों ने देखा और आत्मा ने उसका रसास्वादन किया। परमात्मा पिता ज्ञान, प्रेम, शान्ति, सुख और आनन्द के सागर हैं। उनके इन गुणों का प्रत्यक्षीकरण तभी होता है जब वे जीवात्माओं के समक्ष, मनुष्य तन का आधार लेकर साकार लोक में अवतरित होते हैं।

मेरे मधुबन प्रवास के समय ही एक अँग्रेज भाई लखनऊ से बाबा से मिलने आये थे और हमारे साथ ही बृज कोठी में ठहरे थे। उनको सब 'डन साहब' कहते थे। 'डन साहब' ईसाई धर्म को मानने वाले थे और ईसा मसीह के प्रति उनका अगाध प्रेम

और श्रद्धा थी। 'डन साहब' जब बाबा से मिले तो उन्हें ब्रह्मा में क्राईस्ट का साक्षात्कार हुआ और वे बाबा से चिपट कर कहने लगे (O Lord Thou Hath Come) "प्रभु आप आये हैं, मैं धन्य हो गया आपसे मिलकर।" 'डन साहब' कई दिन मधुबन में ठहरे और उन्हें कई बार ब्रह्मा बाबा से क्राईस्ट का साक्षात्कार हुआ। तभी कहा गया है - "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"

सन् 1955 में बाबा जिस कोठी में रहते थे वह वैसे तो ठीक थी परन्तु ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी स्थान पर होने के कारण वहाँ अजगर और साँप बहुत थे। प्रात: क्लास के बाद बाबा-मम्मा और सब बच्चे घूमने निकल जाते। जब हम बाबा के साथ घूमने निकले तो मैंने देखा कि कोठी के बिल्कुल समीप कई गज लम्बा और मोटा अजगर धीरे-धीरे खिसक कर आगे बढ़ रहा है। बाबा और सब लोग तो निकल गये पर मैं डर के मारे वहीं खड़ा रह गया। बाबा ने देखा तो मुझसे कहा - "बच्चे, इसे फाँदकर आ जाओ, यह कुछ नहीं करेगा, जानवर भी प्यार का संकल्प पहचानते हैं।" हिम्मत करके मैं फाँद तो गया परन्तु मेरा बुद्धियोग उस अजगर से ही लगा रहा। जब हम लौटकर आये तो भी मैंने देखा कि अजगर थोड़ा आगे निकल गया है। हम सब कोठी में अन्दर गये लेकिन मैं थोड़ी देर बाद बाहर आ गया, यह देखने के लिये कि अजगर इस समय कहाँ गया है। बाबा मेरी मनोदशा समझ गये, प्यार से पास बैठाया, समझाया कि कैसे माया किसी-न-किसी रूप में आकर बाबा से बुद्धियोग तुड़वा देती है। शाम को सामूहिक बैठक में मैंने अपनी गलती सुनाई और मम्मा ने मीठी-मीठी ज्ञान की शिक्षाएँ दीं।

साकार बाबा के अव्यक्त होने तक मुझे उनके सम्बन्ध में आए 14 वर्ष हो चुके थे। इस बीच कई बार मधुबन जाकर बाबा के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय तक ईश्वरीय परिवार इतना विस्तृत नहीं था। इसलिए खाते-पीते, उठते-बैठते, घूमते-फिरते, साकार बाबा हमारे सामने होता था। कभी घूमाता, कभी खिलाता, कभी झुलाता और फिर अपनी झोपड़ी में बैठकर बच्चों को पत्र लिखता। साधारण मनुष्यों सदृश्य काम करते भी उनके हर कर्म में अनासक्ति और अलौकिकता की अनूठी झलक होती।

मैं उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के निजी सचिवालय में पदासीन था। परमात्मा की पहचान मिलने पर मन में आया कि सब कुछ छोड़कर बाबा के साथ रहूँ। बाबा को अपनी इच्छा बताई। उत्तर में बाबा ने पत्र लिखा - "बच्चे, तुम्हें अपनी नौकरी में रहकर ही ईश्वरीय सेवा करनी है। राज्यपाल को उठाना है। बड़े माइक की आवाज पूरे प्रदेश में फैलेगी। प्रदेश के अन्य नगरों में होने वाले मेले, प्रदर्शनी जैसे बड़े-बड़े कार्यक्रमों में भी उन्हों को ले जाना है।" बाबा की आज्ञा, बाबा का कार्य शिरोधार्य कर हम निमित्त हो गए। बाबा की इच्छानुसार मैं और युगल वीरबाला जी, आने वाले हर राज्यपाल को ईश्वरीय ज्ञान और संदेश देकर लखनऊ तथा अन्य नगरों में जहाँ भी कोई बड़ा कार्यक्रम होता वहाँ ले जाते। राज्यपाल जहाँ भी जाते वहाँ उनके स्वागत तथा सुरक्षा अर्थ विशेष अधिकारी वर्ग का उपस्थित रहना आवश्यक रहता। इस प्रकार, उन लोगों को भी ईश्वरीय संदेश मिल जाता। कई राज्यपाल ऐसे भी थे जो ज्ञान को अच्छी तरह समझते थे, आदर करते थे और आवश्यकता होने पर सहयोग भी देते थे। महामहिम राज्यपाल गोपाला रेड्डी जी, दादी जी के निमन्त्रण पर मधुबन भी गये थे। डॉ. चन्ना रेड्डी जी जब उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे तो कानपुर, आगरा, देहरादून, इलाहाबाद तथा कुम्भ मेले पर भी अपने केन्द्रों पर गये। बाद में राजस्थान के राज्यपाल नियुक्त होने

पर वे संस्था के सम्बन्ध में रहे।

प्यारे बाबा हमें निरन्तर पत्रों द्वारा प्रेरणा देते रहते कि कैसे ईश्वरीय सेवा करनी है। बाबा की इच्छा थी कि राजभवन के अन्दर कोई बड़ी प्रदर्शनी होनी चाहिए जिसकी आवाज सरकार के कानों तक पहुँचे। उसी सर्वोच्च प्रेरणा के अनुसार अक्टूबर, 1965 में राजभवन परिसर में एक विशाल आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जो कई दिन तक चलती रही। बाबा ने इस प्रदर्शनी में महारथियों, दीदियों तथा दादियों को सेवार्थ लखनऊ भेजा। प्रदर्शनी के लिए बड़े आकार के सुन्दर-सुन्दर तथा नये चित्र भी बनवाये। प्रदर्शनी बड़ी सफल व प्रभावशाली रही। उस समय विश्वनाथ दास जी उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे। सन् 1971 में राजभवन के दरबार सभागार में 3 दिन का सेमिनार रखवाया गया। उस समय गोपाला रेड्डी जी राज्यपाल थे।

ब्रह्मा का तन, जिसमें निराकार परमात्मा की प्रवेशता होती थी, साधारण मनुष्य तन होते भी जैसे साधारण नहीं था। बड़ा सुन्दर, आकर्षक और मन को मोहित करने वाला व्यक्तित्व था ब्रह्मा बाबा का। यों लगता था जैसे कि प्रकृति के पाँच तत्वों ने बड़ी कुशलता और कारीगरी से उस तन का निर्माण किया हो, इसलिये कि परमात्मा को इस रथ का आधार लेना था। उनका हर कर्म अलौकिक था। बाबा चलते थे तो बिना आहट किये इतना तेज जैसे कोई फरिश्ता उड़ रहा हो। प्रात: सैर के लिए जाते तो सबसे पहले पहाड़ी पर पहुँच जाते और फिर आँख मिचौनी खेलने के लिए किसी वृक्ष या पहाड़ी की ओट में छिप जाते। हम बाबा को ढूँढ़ते। एक गीत याद आ जाता –

कभी छुपना, कभी मिलना,
पुन: रूपोश हो जाना।
यह बहलाने का मोहन ने
निराला ढंग निकाला है।।

बाबा का क्लास बड़ा मनोरंजक होता था। बेहद की पढ़ाई पढ़ाते वे बीच-बीच में खूब हँसाते रहते थे। अपने सारे सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ने हैं, इसका अनुभव बाबा के साथ रहने पर सहज हो जाता था। माता-पिता, शिक्षक, गुरु के रूप में वे पालना, शिक्षा और सद्गति का मार्ग बताने के साथ-साथ मित्र, सखा और भाई की तरह साथ में खेलते और खिलाते भी थे। कभी कैरम खेलते, कभी बेडमिन्टन। कानपुर में जब बाबा आये थे और बाबूजी के मकान में ठहरे थे तो मैंने बाबा के साथ बेडमिन्टन खेला। बाबा जीत सकते थे परन्तु जानबूझकर हार गए। मेरे मुख पर भक्ति मार्ग का एक गाना आ गया –

कैसो खेल रचो बनवारी।
हारत आप जितावत हमको,
दीनन के हितकारी।।

बाबा ने इसे स्वीकार कर लिया और बोले - ''बच्चे, अब तक हारते ही तो आये हो, अब बाबा आया है जीत दिलाने''। बाबा के साथ का अनुभव जैसे गूँगे का गुड़ है। आँखों ने लीलाधर की लीलाएँ और चरित्र देखे परन्तु उनको वर्णन करने के लिए शब्द कम हैं। कौन उनका वर्णन कर सकेगा जिनके लिए कहा है –

'हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता'।

❑❑❑

सच्चा सेवाधारी

सच्चे सेवाधारी को न ख्याति की भूख रहती है, न महिमा की प्यास। वह ख्याति प्राप्त करने के विचार से सेवा नहीं करता। उसकी ख्याति स्वयमेव होती है। उसकी सेवा से उसकी प्रत्यक्षता हो ही जाती है परन्तु यदि ऐसा न हो तो उसे उसकी चिन्ता नहीं होती। उसे तो दूसरों का सुख ही आत्म-सुख और आत्म-सन्तोष प्रदान करता है। अपनी सन्तुष्टता का स्रोत वह स्वयं है। तुष्टि के लिए वह किसी अन्य के आगे हाथ नहीं पसारता। महिमा के लिए वह किसी दूसरे का मुंह नहीं निहारता। न महिमा मिलने पर अहंकार आता है और न उसके अभाव में क्षोभ ही।

बाबा ने मुझे सन्तुष्टमणि बनाया



सुख के सागर परमपिता परमात्मा शिव की अनेक लीलाएँ साकार ब्रह्मा द्वारा देखने तथा अनुभव करने का परम सौभाग्य संतोष बहन जी को प्राप्त है। आपकी मीठी वाणी और सरल व्यवहार सहज ही मनुष्य के मन को हर लेता है। आपका त्यागी और योगी जीवन प्रेरणास्पद रहा है। आपने हजारों मनुष्यात्माओं का प्रभु से मिलन कराकर उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। वर्तमान समय आप मुम्बई में महाराष्ट्र तथा आंध्र प्रदेश जोन की निर्देशिका के रूप में कार्यरत हैं, आप समाज सेवा प्रभाग की अध्यक्षा भी हैं। पाठकों के लाभार्थ, आपके अनुभव आपके ही भावों में प्रस्तुत हैं।

–ब्र.कु. रत्नाकर, सायन, मुम्बई

मेरा जन्म सन् 1944 में रावलपिंडी (अब पाकिस्तान में) के धार्मिक परिवार में हुआ। बाल्यकाल से ही मेरी रुचि धार्मिक पुस्तकें पढ़ने, मंदिर में जाने तथा व्रत एवं पूजन करने में अधिक थी। भगवान कौन हैं और कहाँ हैं - यह प्रश्न सदा मन में उठता था और भगवान को पाने की तीव्र इच्छा बनी रहती थी। भारत के विभाजन के बाद हमारा श्रीरामपुर (महाराष्ट्र) आना हुआ। मेरी लौकिक तीन बहनें और एक भाई मुम्बई में रहने लगे थे। मेरी बड़ी लौकिक बहन जेवन्ति, अपने पति के देहान्त के कारण बहुत ही अशान्त थी। उन्हीं दिनों, वह जहाँ रहती थी, वहाँ ब्रह्माकुमारी बहनें सेवाकेन्द्र के लिए मकान देखने आयीं। ज्ञान की बातें बहन को अच्छी लगी और वह ज्ञान-मार्ग पर चल पड़ी। धीरे-धीरे मेरी लौकिक माता जी, दूसरी दो बहनें, भाई और भाभी भी ज्ञान-मार्ग पर चलने लगे।

प्रथम मुलाकात मातेश्वरी जी से

मैं 11वीं कक्षा का इम्तिहान देकर छुट्टियों में लौकिक बहन के पास मुम्बई गई। तब मातेश्वरी जी भी मुम्बई आई हुई थीं। मेरी बहन ने मुझे कहा - ''चलो, मातेश्वरी जी से मिलने चलते हैं।'' लौकिक बहन के आग्रह पर मैं उनके साथ मातेश्वरी जी से मिलने गई। मातेश्वरी जी का व्यक्तित्व अद्भुत तथा ओजस्वी था। उनको देखते ही मुझे प्रेम तथा शान्ति की अनुभूति हुई। उन्होंने मुझे पूछा कि आपका नाम क्या है? मैंने कहा - ''सन्तोष।'' फिर उन्होंने पूछा कि क्या आपको पता है कि सन्तोष देने वाला कौन है, सन्तोष कैसे प्राप्त कर सकते हैं? मैं मुस्कराती रही। मातेश्वरी जी ने वात्सल्य बरसाते हुए कहा कि सात दिन का कोर्स करो तो सन्तोष देने वाले परमात्मा शिव का परिचय हो जाएगा। फिर मुझसे पूछा - ''आपके जीवन का लक्ष्य क्या है?'' मैंने कहा - ''मैं वकील बनना चाहती हूँ।'' मुस्कराते हुए मातेश्वरी जी ने कहा - ''क्या, काले कोट वाला वकील बनोगी? आपको तो ईश्वरीय सेवा करनी है।''

विदाई लेते समय सभी ने मातेश्वरी जी के हाथ में हाथ दिया तो मैंने भी अपना हाथ उनके हाथ में दे दिया। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा - ''अभी आपने मम्मा के हाथ में हाथ दिया है, यह हाथ कभी छोड़ना नहीं।'' उस अलौकिक मुलाकात की मुझ पर बहुत ही गहरी छाप पड़ी।

मेरी रुचि बढ़ती गई

महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के इम्तिहान के बाद जब मैं मुम्बई गई तो बार-बार वही दृश्य मुझे याद आता कि मैंने मातेश्वरी जी के हाथ में हाथ दिया है इसलिए मुझे ज्ञान में रुचि लेनी ही है। मैं कभी सायन सेवाकेन्द्र पर जाती और कभी रीगल में जाती थी

जहाँ पुष्पशान्ता दादी तथा प्रकाशमणि दादी रहती थी। उनके साथ ज्ञान-चर्चा करती थी। उनका ज्ञान समझाने का तरीका बहुत ही सरल और रोचक था। दिल करता था कि ज्ञान की बातें सुनते ही रहें। पढ़ाई के प्रति लगन होने से मेरा ईश्वरीय महावाक्यों से प्यार बढ़ता ही गया।

आबू पर्वत की ओर

सन् 1965 में मुझे बृजइन्द्रा दादी के साथ माउण्ट आबू जाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब पाण्डव भवन में पहुँचे तो वहाँ का शान्त और पवित्र वातावरण मन को भाने लगा। दो घण्टे के बाद हम बाबा से मिलने कमरे में गये। पहली मुलाकात में बाबा ने शक्तिशाली दृष्टि दी और कहा - ''मीठी बच्ची, पहुँच गई हो न बाबा के पास।'' बाबा के मस्तक पर मुझे दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। उनका चेहरा चन्दा-सा चमक रहा था क्योंकि ज्ञान सूर्य स्वयं उनमें प्रविष्ट था। पिताश्री जी से प्रथम मिलन ने मेरे मन को मोह लिया और अमिट छाप लगा दी। ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि बहुत समय से बिछड़ा हुआ बच्चा अपने माँ-बाप से मिल गया हो। इस अलौकिक मिलन से जन्म-जन्मान्तर की थकावट मिट गई तथा निश्चय में और भी दृढ़ता आ गई।

उस समय मुझे मधुबन में कुछ अधिक दिन रहने का मौका मिला। हर रोज मैं बाबा से मिलती थी। हँसी-हँसी में बाबा मुझे कहते थे - ''बच्ची, अभी तुम बड़ी हो गई हो, तुम्हें ईश्वरीय सेवा पर जाना चाहिए, तुम बहुत सेवा कर सकती हो।'' बाबा की स्नेह भरी पालना से मेरा मन मधुबन में लगने लगा। एक दिन मैंने कहा - ''बाबा, मैं मधुबन में ही रह कर सेवा करूँगी, घर नहीं जाऊँगी।'' बाबा ने कहा - ''बच्ची, यहाँ रहने के लिए तुम्हारे पिताजी का स्वीकृति-पत्र चाहिए।'' तुरन्त मैंने पिताजी को पत्र लिखा कि मैं अपने जीवन को ईश्वरीय सेवा में लगाना चाहती हूँ, मुझे यह जीवन बेहद पसंद है, तुरन्त स्वीकृति-पत्र भेजिए।

जिस दिन हमें वापस आना था उसी दिन पिताजी का स्वीकृति-पत्र मिला। मैं दौड़ती हुई बाबा के पास गई और कहा - ''बाबा, मुझे पिताजी ने स्वीकृति दे दी है, अब मैं यहाँ ही रहूँगी।'' बाबा ने मुस्कराते हुए कहा - ''बच्ची, अभी तुम छोटी हो, तुम्हें घर वापस नहीं जाना है तो बृजइन्द्रा दादी के साथ सायन सेवाकेन्द्र पर सेवार्थ जाओ।'' मैंने कहा - ''बाबा, वहाँ तो लौकिक बहनें तथा भाई बार-बार मिलते रहेंगे, मैं सेवा कैसे कर सकूँगी?'' फिर बाबा ने कहा - ''बच्ची, पूना जाओ, जनक बच्ची के पास।'' मैं वहाँ गई और बहुत अच्छी धारणाएँ सीखी।

सन् 1968 में बाबा मुम्बई आये, मैं पूना से बाबा को मिलने मुम्बई गई। तब बाबा ने मुझे सायन सेवाकेन्द्र पर भेज दिया। उसके बाद बाबा मुझे पत्रों में प्रेरणा देते थे - ''बच्ची, एक जगह नहीं बैठना है, दूसरे सेवाकेन्द्रों पर भी चक्कर लगाती रहो, बाबा को समाचार बताती रहो। तुम्हें तो चक्रवर्ती बनना है।'' सचमुच बाबा की यह प्रेरणा मेरे लिए वरदान ही थी।

जब बाबा अव्यक्त हुए

बाबा के अव्यक्त होने पर मुझे पूर्ण निश्चय था कि बाबा का कार्य चलता आया है, चलता रहेगा। मैं मधुबन में समय-प्रति-समय सेवार्थ आती थी, तो अव्यक्त बापदादा से मुलाकात होती थी। एक बार बापदादा ने मुझे वरदान दिया - ''सदा सन्तुष्टमणि हो, सन्तुष्टता के गुण से सर्व को सन्तुष्ट करती रहती हो। जो स्वयं सन्तुष्ट रहता है उससे सभी सन्तुष्ट रहते हैं इसलिए रजिस्टर बहुत अच्छा है।''

बाबा सभी को खुशी में लाते थे और हल्का रखते थे

बाबा सदा खुशी में रहते थे। सदा ऐसी ही बातें सुनाते कि कोई भी मनुष्य कितना भी अशान्त क्यों न हो, चाहे कितनी ही उलझनों में पड़ा हुआ हो, बाबा की मधुर मुस्कान को देखते ही उसकी उदासी और चिंता भाग जाती थी तथा खुशी का पारा चढ़ जाता था। किसी ने भी बाबा के चेहरे पर चिन्ता या उदासी की रेखा नहीं देखी। बाबा के आसपास के वातावारण में सदा खुशी की लहरें तथा खुशी की खुशबू

फैली रहती थी। उस पवित्र खुशी के वातावरण में माया की बातें तथा सांसारिक उलझनें भूल जाना मनुष्य के लिए स्वाभाविक ही था। समस्या आने पर भी बाबा सबको हर्षोल्लास की बातें बताते हुए खुशी का प्याला पिलाते थे। बच्चों में नया दम, नया उमंग भरते थे जिससे समस्याएँ हल्की महसूस होती थी।

बाबा कहते थे - ''बच्चे, आप विजयी रतन हो। विजय का तिलक आपके माथे पर मानो लगा ही हुआ है, बस, आप इतना करना कि घबराना नहीं, थकना नहीं और रुकना नहीं बल्कि, जो मार्ग शिव बाबा अब दिखा रहे हैं, उस पर चलते चलना।'' कभी कहते थे - ''बच्चे, ये परीक्षाएँ अन्तिम सलाम करने आई हैं। बस, ईश्वर के प्रेम से इनको पार करो तो आपके कदम-कदम में पदमों की कमाई होगी।'' इन युक्तियों को बताते हुए बाबा नित्य प्रति सबको खुशी का प्याला पिलाते थे।

मानव मात्र के लिए वात्सल्य से भरपूर हृदय था बाबा का

पिताश्री का हृदय मानव मात्र के लिए वात्सल्य से लबालब भरा हुआ था। बड़ी-से-बड़ी गलतियों और कमजोरियों पर ध्यान न देकर वे हृदय का समस्त प्यार आत्माओं पर उड़ेल देते थे। लौकिक पिता के प्रेम में भी स्वार्थ की गन्ध आती है लेकिन मानव मात्र के अलौकिक पिता 'प्रजापिता ब्रह्मा' का प्रेम पूर्णत: निस्वार्थ था। जैसे लौकिक पिता अपने पुत्र को जेल से छुड़ाने के लिए बड़े-से-बड़े कष्ट सहर्ष सह लेता है, उसी तरह पिताश्री एक-एक जीवात्मा को माया की कैद से छुड़ाने के लिए अपने आराम की ओर भी ध्यान न देकर निरन्तर सेवारत थे। मानव-मात्र के लिए इतना पितृ-स्नेह था पिताश्री के हृदय में!

विदेश सेवा पर जाना हुआ

सन् 1999 में मैं दुबई, लन्दन और अमेरिका आदि देशों में ईश्वरीय सेवार्थ गई थी। इस दौरान बाबा ने बहुत सुन्दर अलौकिक अनुभव कराए। ऐसा लगता था कि ब्रह्मा बाबा अव्यक्त होने के बाद विदेश में सेवा कर रहे हैं। सभी के मुख से बाबा-बाबा निकलता है, सचमुच कमाल देखी विदेश में बाबा की।

मुम्बई में पार्क द्वारा सेवा की धूम

सन् 1993 में हम सेवाकेन्द्र के लिए बड़ा स्थान ढूँढ़ रहे थे। किसी ने सुझाव दिया कि मुम्बई में स्थान मिलना तो बहुत मुश्किल है, आप गार्डन एडाप्ट क्यों नहीं करते हो? उन दिनों मुम्बई महानगरपालिका के उपायुक्त, देसाई जी मधुबन आये थे। उन्होंने आबू पर्वत स्थित पीस पार्क देखा, तो बहुत अच्छा लगा। उन्हें संकल्प आया कि ऐसा सुन्दर पार्क मुम्बई में बनाया जाय। जब हम उनके पास गए तो उन्होंने एक एकड़ जमीन, जो 20-25 वर्ष से खाली पड़ी थी, हमें दी। उस स्थान पर भाई-बहनों ने मिलकर सुन्दर गार्डन बनाया। अब लोग स्वत: ही वहाँ आते हैं, ईश्वरीय ज्ञान रुचि से सुनते हैं। उस गार्डन को देखकर महानगरपालिका ने हमें अन्य दूसरे स्थान भी दिए। मुम्बई में अभी लगभग 19 पार्क बन गए हैं जहाँ बहुत अच्छी सेवाएँ चलती रहती हैं। सेवा को आगे बढ़ाने के लिए बाबा टचिंग भी कराते रहते हैं। जितनी बुद्धि सूक्ष्म, दिव्य एवं पवित्र बनती जाती है तो बाबा की प्रेरणाओं को पकड़ती है जिससे सेवा एकदम सहज हो जाती है।

मैंने जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष आत्मिक स्मृति और बाबा की याद की गहराई बढ़ाने पर ध्यान दिया। निमित्त बनी हुई दादियों से सच्चाई से सम्बन्ध रखे जिससे सदा उनकी मुझ पर कृपा-दृष्टि रही। मैं सदा ध्यान देती हूँ कि बाबा और मधुबन की याद से स्वयं को हल्का रखूँ तथा सेवाक्षेत्र में आने वाली भिन्न-भिन्न बातों से ऊँची उठ कर, डबल लाइट रह कर उड़ती कला की अनुभूति करती रहूँ। सदा यही ख्याल रहता है कि बाबा से प्राप्त सुख का अखुट खजाना सबको बाँटती रहूँ। अभी मेरा यही लक्ष्य रहता है कि समय की तीव्र गति अनुसार अपने पुरुषार्थ की गति को तेज करके सम्पूर्णता की मंजिल पर विजय का झण्डा लहराएँ और बाप को प्रत्यक्ष करने के कार्य को सम्पन्न करें।

मैं-पन से मुक्ति सफलता की युक्ति



भ्राता मदनलाल शर्मा जी ईश्वरीय परिवार में 'भामाशाह' के नाम से जाने जाते हैं। प्यारे शिव बाबा तथा ब्राह्मण परिवार की दुआओं के बल से, भारत में कई स्थानों पर फैले विस्तृत व्यापार को आप इशारे से सम्भालने में समर्थ हैं। तनावमुक्त व्यापार प्रबन्धन के आप सजीव नमूने हैं। प्यारे ब्रह्मा बाबा की दिव्य पालना में आपने क्या पाया - आपके ही शब्दों में व्यक्त है।

–ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

जन्मभूमि राजस्थान से 21 वर्ष की आयु में इन्टरमीडियट करके मैं कलकत्ता चला गया। अध्ययन में अत्यधिक रुचि होने के कारण मैंने मेहनत से पाँव पर खड़े होकर एल.एल.बी., एम.कॉम. तथा हिन्दी साहित्य रत्न की डिग्रियाँ हासिल कीं। इसके बाद सन् 1957-1958 में हौजरी की फैक्टरी स्थापित की। अध्ययन ने मेरे चिन्तन को काफी विकसित किया और मैं जीवन का वास्तविक अर्थ खोजने लगा। मेरी विवेकानन्द में रुचि थी। उनकी किताबें पढ़ी। उनसे मैं ईश्वर की तरफ आकर्षित हुआ। अनेक प्रेरणाएँ तथा उमंग प्राप्त हुईं परन्तु ध्यान का जब प्रश्न आता था तो उलझन होती थी कि मन किस पर एकाग्र करूँ, स्वामी विवेकानन्द जी पर, स्वामी परमहंस जी पर या फिर काली पर? मैं यह विचार करता था कि माँ काली भी कहाँ से आई, इनको किसने बनाया? ध्यान प्रक्रिया में स्वस्थ शरीर, सोने में सुहागे का काम करता है इसलिए योगासनों का अभ्यास भी किया। उनसे शारीरिक लाभ हुआ परन्तु योगासन से मानसिक एकाग्रता और ईश्वरीय एकाग्रता की प्यास नहीं बुझी। मैं ईश्वर को जानना चाहता था और उन्हीं पर मन एकाग्र करना चाहता था परन्तु ईश्वर है कौन, यह पहेली हल नहीं हो पा रही थी। मैं अनेक मठों में जाता रहा, सन्तों-महात्माओं से मिलता रहा, उनसे प्रश्न पूछता रहा कि भगवान कौन है परन्तु सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलते थे। अधिकतर मुझे पूजा-पाठ के लिए उत्साहित किया जाता था जिसमें मेरी रुचि और विश्वास नहीं था।

सन् 1965 में कलकत्ता में टिबरेवाल धर्मशाला में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई। एक वकील मित्र की सलाह पर मैं वहाँ गया। उस दिन प्रदर्शनी के आयोजन का आखरी दिन था। मैंने विवेकानन्द साहित्य में राजयोग शब्द बार-बार पढ़ा था। बहन जी ने मुझे चित्रों द्वारा ज्ञान की वास्तविकता समझाई और फिर राजयोग सीखने का निमन्त्रण दिया। मैं उनकी रूहानियत तथा शालीनता से काफी प्रभावित हुआ, मैंने उनसे निश्चित स्थान का पता लिया और लगभग सप्ताह बाद राजयोग सीखने पहुँच गया। पहले दो दिन तो बहनें मुझे ज्ञान सिखाती रही परन्तु मेरे बहुत प्रश्नों को देखते हुए तीसरे दिन से भ्राता निर्वैर जी ने मेरी आध्यात्मिक सेवा करनी प्रारम्भ कर दी। उनके द्वारा मुझे अध्यात्म के गूढ़-से-गूढ़ प्रश्न का भी सही उत्तर मिला, मैं पूर्ण सन्तुष्ट हो गया और अब दैवी बहनों तथा भाइयों के समीप सम्बन्ध में आने लगा। साप्ताहिक पाठ्यक्रम के बाद मुझे ईश्वरीय महावाक्यों की एक प्रति दी गई जिसमें भगवानुवाच था - ''बच्चे, साधु-सन्यासियों के पास परमात्मा की कोई स्पष्ट पहचान नहीं

है।'' यह सुनकर मन को एकदम लगा कि यह बात बताने वाला कौन है, उनसे जरूर मिलना चाहिए और मैं 15 दिन के बाद ही कलकत्ता से सीधा मधुबन बाबा के घर आ पहुँचा।

प्यारे ब्रह्मा बाबा को पहली नजर में देखा तो विशेष में भी विशेष उनका व्यक्तित्व लगा। उनके साथ खाना, खेलना सभी कुछ मन को भा गया। बाबा का पहनावा (धोती-कुर्ता) बड़ा सादा था, उसमें बड़ा अपनापन झलकता था। एक दिन मैं पाण्डव भवन में हवाई महल (रहने के एक स्थान का नाम) की सीढ़ियाँ उतर रहा था और प्यारे ब्रह्मा बाबा सामने नीचे खड़े थे। मुझे देखते ही उन्होंने स्वाभाविक शब्दों में कहा - ''गुडमॉर्निंग बच्चे।'' उनका इस तरह का सम्मान तथा प्रेम भाव बड़ा सुखद लगा। उस समय ब्रह्मा बाबा मुझे संसार की अद्वितीय हस्ती नजर आए। मैंने बहुत दुनिया घूमी थी, फिर भी मैं उनसे बहुत प्रभावित हो चुका था और मन-ही-मन निश्चय किया कि इनका साथ जीवन के लिए हर प्रकार से कल्याणकारी है। बचपन से ही लौकिक पिताजी की छत्रछाया से मैं वंचित था, प्यारे ब्रह्मा बाबा ने उस खाली स्थान को पूरी तरह भर दिया।

मैं सात दिन वहाँ रहा। गृहस्थ जीवन में ब्रह्मचर्य की पालना जैसे कड़े नियम को मैंने प्यारे बाबा के सरल शब्दों द्वारा सहज होते देखा। बाबा धारणा का पाठ सिखाते नहीं थे वरन् यह कहकर कि 'प्यारे शिव बाबा को याद करना है और पावन बनना है, ज्यादा कुछ मेहनत नहीं' धारणा को जीवन का स्वाभाविक अभिन्न अंग बना देते थे।

ब्रह्मा बाबा से मुलाकात के बाद मैं जयपुर में लौकिक घर में गया। युगल से हर बात की सहमति मिली। लगभग एक वर्ष बाद उन्हें भी बाबा से मिलाने लाया। प्यारे बाबा ने बहुत खिलाया-पिलाया-बहलाया और रूहानी पालना दी। बाबा ने मुझसे पूछा - ''घर में कैसा घी खाते हो ?'' मैंने कहा - ''शुद्ध घी खाते हैं, बाबा।'' प्यारे बाबा अपने साकार पार्ट के अन्त तक मुझे शुद्ध घी का खाना ही देते रहे। बाबा के अव्यक्त होने के 15 दिन पहले मैं प्यारे बाबा से मिला और उनके सामने एक बात रखी जिसे मैं बड़ी भारी समझ रहा था। बाबा ने कहा - ''बच्चे, नथिंग न्यू, ऐसा ही चलता रहता है।'' बाबा का यह अति संक्षिप्त पर शक्तिशाली उत्तर सदा के लिए मेरे लिए सीख बन गया। बाबा उस समय इतना न्यारा और प्यारा लग रहा था मानो इस दुनिया में है ही नहीं।

प्यारे ब्रह्मा बाबा से और उनके तन में विराजमान प्यारे शिव बाबा से मिलन मनाने मैं वर्ष में 6 या 7 बार मधुबन आ जाता था। साकार को देखते हुए भी अन्दर में सदा स्मृति थी कि इनके द्वारा निराकार परमात्मा अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं। साकार बाबा के अव्यक्त होने के समाचार से एक बार मन में प्रश्न उठा परन्तु पूर्ण निश्चय था कि ईश्वरीय कार्य सम्पन्न होकर ही रहेगा इसलिए भावनाएँ नियन्त्रण में रहीं। बाद में तो अव्यक्त महावाक्यों द्वारा भविष्य के कई राज़ों का स्पष्टीकरण सुनकर तथा बाबा के बदले हुए पार्ट (सूक्ष्म वतन से सेवा) को जानकर भविष्य की विशाल सेवा-योजना का दिग्दर्शन स्वत: होने लगा।

हम सभी आज प्यारे बाबा की विशाल सेवा-योजना के साक्षी हैं। विश्व के 90 देशों के बच्चों तक प्रभु की आवाज़ पहुँच चुकी है। दिन-प्रतिदिन इसका विस्तार होता जा रहा है। मुझे भी सन् 1998 में राजयोगिनी दादी गुलजार जी के साथ, लंदन तथा ब्रिटेन के लगभग सभी स्थानों पर, विभिन्न धर्म और संस्कृति को लाँघकर ईश्वर पिता की गोदी में समाने वाले अनेक बाबा के बच्चों से मिलने और अनुभव की लेन-देन करने का सौभाग्य मिला। दादी जानकी जी के वरदानी सान्निध्य में

विशेष स्नेह और पालना मिली। सन् 1999 में हांगकांग, ऑस्ट्रेलिया तथा थाइलैण्ड जाना हुआ और फिर सन् 2000 में लन्दन, जर्मनी तथा अमेरिका के राजयोग तीर्थों का अवलोकन किया। विदेशी भाई-बहनों को साकार बाबा के साथ के अनुभवों की लेन-देन में बड़ी खुशी होती है। पाण्डव भवन (देहली) के गोपाल भाई का भी विदेश-यात्रा के दौरान साथ, स्नेह और सहयोग बना रहा।

कलकत्ता के ब्रह्माकुमार जगदीश अग्रवाल प्रारम्भ से ही ईश्वरीय ज्ञान तथा व्यवसाय दोनों में मेरे साथी रहे हैं। अपने दो बेटों के साथ मेरा पारिवारिक तथा व्यवसायिक जीवन संयुक्त रूप से चलता है। हमारे हौजरी के कारखाने, वर्तमान समय, देहली,कलकत्ता, तमिलनाडु में चल रहे हैं। मुख्य कार्यालय जयपुर में है। इतना बड़ा कारोबार होते हुए भी तन-मन का हल्कापन सदा रहता है। शरीर भी स्वस्थ है और व्यवसायिक सम्बन्ध-सम्पर्क में सब जगह सन्तुष्टता का साम्राज्य है। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि 'मैं-पन' से बचने का जितना ज्यादा प्रयास किया है उतनी ही ज्यादा सफलता सामने आई है। अपने को निमित्त समझ, प्यारे बाबा को मालिक बना देना ही सफलता का गुप्त रहस्य है। सबको आगे रखने से तथा ईमानदारी, सच्चाई, सफाई, सद्व्यवहार आदि सद्गुणों को साथी बना लेने से समस्याएँ खुद-ब-खुद समाप्त हो जाती हैं। आध्यात्मिक पुरुषार्थ में न्यारेपन तथा प्यारेपन की नीति अपनाकर तन-मन के सभी बन्धनों से मुक्त होता जा रहा हूँ, ऐसा मुझे अनुभव हो रहा है।

***

कैसे कहूँ – हैप्पी न्यू ईयर

– ब्र.कु. राजवीर, बड़ौत

लोग आपस में बधाई दे रहे हैं जोर से मिलाकर हाथ।
पता नहीं एक ही रात में हो गई है ऐसी क्या बात।।
देखता हूँ बद से बदतर हो रहे हैं हालात।
इंसानियत को मिल रही है हर तरफ से मात।।
कितना खराब है दुनिया का ऐटमोसफीयर
भला मैं कैसे कहूँ – हैप्पी न्यू ईयर।

अभी बन्द नहीं हुए हैं बमों के धमाके,
अभी हाथ थके नहीं हैं गोलियाँ चलाके।
हज़ारों मासूमों का लहू बहाके,
अभी तो लोग हंस रहे हैं दूसरों को रुलाके।
चारों तरफ है फीयर ही फीयर
भला मैं कैसे कहूँ – हैप्पी न्यू ईयर।

सर्दी में, गर्मी में पगडण्डी पर सोते हैं लोग,
ना पेट में रोटी, ना तन पे लंगोटी, जिन्दगी को ऐसे भी ढोते हैं लोग।
और अपनी बदनसीबी पे रोते हैं लोग,
क्यों इतने बेबस और लाचार होते हैं लोग,
जीवन की गाड़ी को लगा है रिवर्स गीयर
भला मैं कैसे कहूँ – हैप्पी न्यू ईयर।

काम है, क्रोध है, घना अहंकार है, विकारों के वश सारा संसार है।
झूठ है, पाप है और अनाचार है, छल-कपट और ठगी का व्यापार है।
घृणा और हिंसा की खूब भरमार है।
स्वार्थ के रिश्तों से प्यार हुआ डिसअपियर
भला मैं कैसे कहूँ – हैप्पी न्यू ईयर।

वरदानों के सागर ने मुझे वरदानी मूर्त बनाया



वरदानों के सागर परमात्मा शिव की अनेक लीलाएँ साकार ब्रह्मा द्वारा देखने का परम सौभाग्य चन्द्रा बहन जी को प्राप्त है। आप करुणा तथा दया की साक्षात् मूर्ति हैं। आपके व्यक्तित्व में चन्दा जैसी शीतलता और व्यवहार में विशेष मधुरता और मृदुता है। आपने वरदाता से अनेक वरदानों को प्राप्त करके स्वयं को भरपूर किया है। आप वर्तमान समय मॉरिशियस में ईश्वरीय विश्व विद्यालय की जिम्मेदारियों को संभालते हुए कार्यरत हैं। श्रेष्ठ ईश्वरीय सेवा व योग-साधना में रत चन्द्रा बहन जी के दिव्य अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं।

–ब्र.कु. आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

मेरा लौकिक जन्म सन् 1931 में कराची (अब पाकिस्तान) में हुआ। भारत के विभाजन के बाद दिल्ली आना हुआ। माता-पिता धार्मिक वृत्ति के होने के कारण, बचपन से ही मेरी रुचि सत्संग करने तथा साधु-महात्माओं की संगत करने में अधिक थी। अनन्य भक्तों की जीवन-गाथा पढ़ने पर मन में तीव्र लालसा उठती थी कि मैं भी प्रभु-मिलन का अनुभव करूँ और उनका साक्षात्कार करूँ। उसके लिए मैं देवी-देवताओं की पूजा करना तथा व्रत करना आवश्यक समझती थी। सदा मन में प्रभु-मिलन की अभिलाषा बनी रहती थी और उसे पाने के लिए कठिन त्याग-तपस्या करने को तैयार थी।

कराची में जब ओम मंडली की स्थापना हुई थी, तो हमारे माता-पिता उसमें रुचि से जाते थे। इसके बाद भारत में सन् 1954 में दिल्ली में भी ब्रह्माकुमारी बहनें हमारे यहाँ आती थीं। बाद में घर के समीप विनय नगर में सेवाकेन्द्र खुला तो माता-पिता के साथ लौकिक बहन मोहिनी भी, जो अभी अमेरिका में ईश्वरीय सेवा पर उपस्थित है, जाने लगी। उनके जीवन में विशेष परिवर्तन देखकर मुझे लगा कि मैं भी वहाँ जाकर जीवन को श्रेष्ठ बनाऊँ। लौकिक पढ़ाई पढ़ते-पढ़ते मैं सेवाकेन्द्र पर भी जाने लगी। वहाँ मुरली अर्थात् परमात्मा के महावाक्य सुनते-सुनते मेरी रुचि बढ़ती गई। जीवन में अलौकिक खुशी की अनुभूति होने लगी।

प्रथम मुलाकात बाबा से

सन् 1962 में मुझे माउण्ट आबू जाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ जहाँ पिताश्री ब्रह्मा और उनके तन में प्रविष्ट निराकार शिव से सम्मुख भेंट हुई। बाबा ने मुझे स्नेहभरी दृष्टि दी, मुझे लगा जैसे कि नेत्र मार्ग से ही प्रेम के सागर ने, असीमित अलौकिक स्नेह मेरे अन्तर की गहराइयों में छलका दिया। मेरी आँखों से प्रेम और खुशी के आँसू बह निकले। मन-ही-मन कह रही थी मैं - "हे भगवान, आखिर आपने मेरी पुकार सुन ही ली और स्वयं अपना बनाने आ गए हैं, मैं कितनी खुशनसीब हूँ!" बाबा का मुस्कराता हुआ चेहरा, दिव्यज्योति युक्त आँखें, मीठी-मीठी बातें तथा सहज व्यवहार ने मेरा मन हर लिया। उनके व्यक्तित्व में इतनी कशिश थी जो चुम्बक समान हमें बार-बार सम्मुख खींच ले जाती थी।

बाबा के संग बीते उन कुछ दिनों में ही बाबा को अति निकट से देखने का सुअवसर मिला। आज भी अतीत की वे स्मृतियाँ जब-तब ताजी हो जाती हैं। सचमुच, उनमें कितनी असाधारण प्रतिभा थी। त्याग, तपस्या और सेवा की वे साकार प्रतिमूर्ति थे। उनका जीवन, विश्व के इतिहास में अद्वितीय उदाहरण था और हम

बच्चों के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय।

बाबा हमारे साथ खेल खेलते थे

पिताश्री ब्रह्मा बुजुर्ग थे, फिर भी बच्चों को खुश करने के लिए बड़ी चुस्ती से बेडमिंटन का खेल खेलते थे। जब बाबा हमारे साथ खेलते थे तब एकदम लाइट हाउस और माइट हाउस अनुभव होते थे। एक बार बाबा ने मुझ से पूछा - ''बच्ची, जानती हो, किसके साथ खेल रही हो, शिव बाबा के साथ खेल रही हो न।'' ऐसा न सिर्फ शब्दों में कहा लेकिन व्यवहारिक रूप से अनुभव कराया। बाबा में इतनी अलौकिकता थी कि उनका व्यक्तित्व साधारण मनुष्य से बहुत भिन्न लगता था।

बाबा ने हमें कर्मयोग भी सिखाया

हम जब भी ब्रह्मा बाबा को मधुबन में चलते-फिरते देखते थे तो वे अव्यक्त फरिश्ता नजर आते थे। चारों ओर दिव्य प्रकाश की रश्मियाँ फैलती हुई दिखाई देती थी। बाबा, कभी धोबीघाट की सेवा में, कभी सब्जी या अनाज साफ करने में बच्चों का उमंग बढ़ाने के लिए सहयोग देते थे। बच्चों से पूछते थे कि किसके यज्ञ की सेवा कर रहे हो, ऐसे युक्ति से शिव बाबा की याद दिलाते थे। हम बाबा में माता तथा पिता का रूप देखते थे। सचमुच, बाबा ने हमें कर्मयोग सिखाते-सिखाते कर्म करने की कला भी सिखाई। बातचीत करते भी पिताश्री आत्मिक स्थिति में रहते थे। सदैव लगता था जैसे कि वे शिव बाबा की याद में खोये हों। उनकी व्यक्तिगत स्थिति राजा जनक की विदेही स्थिति के समान अनुभव होती थी।

एक बार बाबा मुझे गौशाला में ले गए, वहाँ सिर्फ दो गायें थीं। एक गाय बैठी थी, तो बाबा ने कहा कि यह गाय बीमार है। हमने सोचा कि बाबा गउओं का भी डॉक्टर है। बाबा ने देखभाल करने वाले बच्चे को कुछ निर्देश दिए कि इस गाय को यह खिलाना और यह-यह दवाई देना। दूसरे दिन मुरली में बाबा ने कहा - ''गाय को भी इतनी अक्ल है कि घास खाने के बाद जुगाली करनी है। अगर नहीं करती है तो समझो कि बीमार है। ऐसे, बाबा तुम बच्चों को भी ज्ञान-घास खिला रहा है, दिन भर तुम्हें मंथन करना चाहिए नहीं तो समझेंगे कि बीमार है।''

सबको प्यार तथा सम्मान देकर आगे बढ़ाना

आजकल कोई किसी को नि:स्वार्थ प्यार नहीं देता। कोई सच्चे और शुद्ध प्यार से व्यवहार नहीं करता। बाबा सबको स्वाभाविक, सर्वश्रेष्ठ, सम्पूर्ण और सच्चा प्यार देते थे। ''लाडले बच्चे'' - ऐसा कह कर वे सदा पुकारते थे, तो आत्मा बोल उठती कि ये किसी सांसारिक व्यक्ति का प्यार नहीं है। इस प्रकार, सच्चे प्यार से सिक्त होकर आत्मा अभूतपूर्व शीतलता और उच्च सौभाग्य का अनुभव करती थी। जब मुनष्य को प्यार मिल जाय तो वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। प्यार पाकर तो मनुष्य जान भी न्योछावर कर देता है।

बाबा हमेशा सन्तुलन में रहते थे

बाबा रायल्टी के भी रूप थे तो साथ में नम्रता के भी। समस्त विश्व में, वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्मा तथा भविष्य में श्री नारायण रूपी सर्वोच्च पद के अधिकारी होते हुए भी उन्हें मिथ्या गर्व छू तक न सका था। हम देखते हैं कि किसी-किसी को अच्छी बुद्धि होने का, अच्छा भाषण करने का, अच्छी सेवा करने का, निमित्त बनने का अहं रहता है लेकिन बाबा कहते थे कि जो निमित्त भाव से भी ऊपर चले जाते हैं, वे ही महान कार्य कर सकते हैं।

बच्चों की खुशी के लिए निद्रा और आराम का त्याग

पहली बार मधुबन पहुँचने वाले

बच्चों की, युगों से प्रतीक्षारत आँखें वहाँ कदम रखते ही उस अलौकिक पिता को बड़ी बेसब्री से ढूँढ़ने लगती थीं। एक-एक सेकण्ड भी उन्हें वर्षों के समान लगता था। युगों के अन्तराल से बिछुड़ी सन्तान उस दिव्य मिलन की देरी को कैसे सहन करतीं इसलिए रहमदिल बाबा, उनकी तीव्र जिज्ञासा को शान्त करने के लिए उस समय भी निद्रा और आराम का त्याग करके आ पहुँचते थे।

बाबा हमेशा हल्के नजर आते थे

बाबा हर परिस्थिति में हल्के दिखाई देते थे। पुरुषार्थ में कभी नहीं कहा कि क्या करूँ, यह मेरा संस्कार है, मेरा हिसाब-किताब है। कभी किसी विपरीत परिस्थिति के वश भी बाबा को नहीं देखा। हम बच्चे कभी-कभी अपने पुराने संस्कार या हिसाब-किताब चुक्तू करते हुए नजर आते हैं लेकिन बाबा कहते थे कि जिसने ड्रामा के राज़ को पूरा समझा है वह दूसरे के पार्ट को पार्ट समझ देखता है, सदा साक्षीपन की स्थिति में रह कर न्यारा और हल्का रहता है।

विदेश सेवा में मेरा पार्ट

दिल्ली में कुछ वर्ष सेवा करने के बाद मैं सन् 1975 में लन्दन, अमेरिका, कनाडा, आदि देशों में बाबा की सेवा अर्थ निमित्त बनी। सन् 1977 से अब तक मॉरिशियस में सेवा पर उपस्थित हूँ। मॉरिशियस बहुत बच्छा देश है, यहाँ बाबा के बच्चों का बहुत बड़ा संगठन है। पिछले 26 वर्षों में बाबा ने ईश्वरीय सेवा में सुन्दर अलौकिक अनुभव कराए हैं तथा विभिन्न वर्गों की अच्छी सेवा कराई है।

वर्तमान समय बाबा के इशारे अनुसार मैं विशेष योग-साधना तथा मनन-चिन्तन की गहराई बढ़ाने पर ध्यान देती हूँ। विशेष अमृतवेले योगाभ्यास द्वारा बाबा से शान्ति और शक्ति लेकर अनेक आत्माओं को देने का पुरुषार्थ करती हूँ। ब्रह्मा बाबा के ऊँचे आदर्शों को जीवन में उतारने पर ध्यान देती हूँ। सदा यही ख्याल रहता है कि निमित्त बनी हुई दादियों से जो पालना मिली है तथा बाबा से जो अखुट खजाने मिले हैं वे सबको बाँटते रहें।

इस प्रकार, जीवनयात्रा ईश्वर की छत्रछाया में व्यतीत हो रही है। अपने भाग्य को निहार कर हर्ष होता है कि भक्तिकाल में किये गये पुण्य कर्मों के प्रत्यक्ष फल के रूप में हमें अन्तिम जन्म में भगवान का साथ मिल गया है। ईश्वर की श्रेष्ठ पालना में पले, ईश्वर के मार्गदर्शन में जीवन आगे बढ़ा और प्रतिपल ईश्वर की ही प्रेरणाओं अनुसार उन्नति को पा रहे हैं। अब तो मन में यही शुभकामना है कि जल्दी से जल्दी सम्पन्न स्थिति को प्राप्त कर धरती पर आये हुए भगवान को प्रत्यक्ष करें ताकि अन्धकर में भटकती हुई करोड़ों आत्माएँ प्राण प्यारे प्रभु से मिलन मना सकें। ✧✧✧

उत्साह

आप जानते हैं कि पानी से भाप तभी बनती है जब उसको 212 डिग्री फारनेहाइट तक गर्म किया जाये। यह काम न तो 200 डिग्री से होगा और न ही 210 डिग्री से। बड़े-बड़े इंजनों को चलाने तथा गाड़ियों को दौड़ाने वाली भाप पैदा करने के लिए पहले पानी को खौलाना होगा। कोसे पानी से यह कार्य नहीं हो सकता है। आप देखेंगे कि बहुत से अपने जीवन की गाड़ी को कोसे या साधारण गर्म पानी से चलाने और आगे बढ़ाने की कोशिश में लगे रहते हैं। उन्हें यह देख कर आश्चर्य भी होता है कि वे गतिहीन क्यों खड़े हैं, आगे क्यों नहीं बढ़ रहे ? परन्तु जैसे कोसे पानी से भाप नहीं बनती और इंजन नहीं चल सकता वैसे ही मामूली-सा उत्साह रखने वाले मनुष्य को बड़े-बड़े कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

अनोखी पालना अल्लाह और आदम की

ब्रह्माकुमार दशरथ, नारायण गांव (पूना)

सन् 1967 के एक दिन हमारे सेवाकेन्द्र पर विशेष खुशी का वातावरण था क्योंकि उस दिन राजयोगिनी दादी जानकी जी ने पूना से आकर हम सात भाई-बहनों की एक पार्टी को आबू महान तीर्थ पर जाने की स्वीकृति प्रदान की थी। इस्माइल भाई कहते रहते थे कि मधुबन माना ही अल्लाह का बगीचा, वहाँ स्वयं कयामत के समय आदम अले सलाम के तन में अल्लाह (शिव बाबा) आकर कब्रस्तान के मुर्दों (देह अभिमानी मनुष्यों) में जान भर रहा है। उनको अल्लाह से सन्मुख मिलने की बहुत उत्कण्ठा थी इसलिए यह कार्यक्रम बना था। रेल द्वारा आबू रोड पहुँचने पर सफेद वस्त्रधारी, फरिश्ता स्वरूप खुदाई खिदमतगार भूरी दादी को, रंगीन वस्त्रों वालों की गहमागहमी में हमने सरलता से पहचान लिया। वे हमारे स्वागत और सहयोग के लिए आबू रोड में उपस्थित थीं।

अरावली की ऊँची-ऊँची पर्वतमालाओं और गहरी घाटियों को बस द्वारा पार कर हम प्यारे मधुबन में पहुँच गए। सफेदी से सजे हुए इस परिसर की दीवार पर लिखा है - 'पाँच विकारों से वशीभूत कोई भी व्यक्ति अन्दर प्रवेश नहीं कर सकता।' द्वार पर पहुँचते ही इस्माइल भाई ने कहा - ''यही जन्नत का दरवाजा है।'' हम खुशी-खुशी अन्दर प्रविष्ट हुए। प्यारे बाबा ने पहले ही कह रखा था कि नारायण गाँव के बच्चों को नए बने भवन (एरोप्लेन बिल्डिंग) में ठहराना है।

तरोताजा होकर हम बाबा को देखने-मिलने निकले। बाबा अपनी कुटिया में विराजमान थे। अर्बुदाचल पर श्वेत वस्त्रधारी प्रजापिता ब्रह्मा अर्धपद्मासन लगाए अपनी सहयोगी शिव-शक्तियों के साथ नई दुनिया निर्माण के कार्य में निमग्न थे। चेहरे पर असीम दिव्यता थी, नयनों में रूहानी नूर झलक रहा था। कँधा बिल्कुल सीधा था। बाबा ने प्यार से कहा - ''आओ बच्चे, आओ और फिर एक-एक को गोदी का अतीन्द्रिय आनन्द अनुभव करवाया। सभी की जन्म-जन्म की प्रभु मिलन की प्यास जैसे तृप्त हो गई।

भोलेनाथ बाबा के भण्डारे का आकर्षण हमें खींचकर उस ओर ले गया। वहाँ गए तो देखा कि कोई चावल उबाल रहा था, कोई रोटी बेल रहा था, कोई सब्जी काट रहा था। इस्माइल भाई तथा कासम भाई तो वहीं पर अपने पाँव रोपकर खड़े हो गए। आगे जाना नहीं चाह रहे थे। आँखें उस सुन्दर दृश्य से चिपक कर रह गई थीं पर बाद में ज्ञान-क्लास था इसलिए जाना पड़ा। क्लास पूरा होने पर हमें समाचार मिला कि अगले दिन ब्रह्मा-भोजन बनाने की सेवा प्यारे बाबा ने हमें सौंप दी है, मानो मन की मुराद मिल गई। खुशी को चार चाँद लग गए। नशा चढ़ गया कि कल भण्डारा हमारे हाथ में होगा। भोजन बनाकर हम भण्डारे से बाहर आए तो एक और खुशखबरी मिल गई कि प्रेम के सागर बापदादा हमारे साथ ही ब्रह्मा भोजन स्वीकार करेंगे। वर्तमान समय जहाँ मधुबन की डिस्पेंसरी है वहीं पास में बड़ी मेज लगाई गई थी जहाँ बाबा हम बच्चों का इन्तजार कर रहे थे। बाबा ने दूर से ही प्रेम-पुकार की - आओ बच्चे, आज बच्चों का बनाया भोजन बच्चों के साथ ही स्वीकार करेंगे। हमें रूहानी नशा चढ़ गया कि ब्रह्मा-भोजन और ब्रह्मा बाप के संग, वाह! किस्मत वाह!! मैं 15 वर्ष का कुमार, बाबा को देख-देख, दृष्टि लेने-लेने में ही कछुए की तरह अपना पेट भरा-भरा

महसूस कर रहा था।

दोपहर में आराम करने के बाद चार बजे सांयकाल भक्तवत्सलम् प्रभु ने हमें बगीचे में बुला लिया, कहा – ''बच्चे, देखो ये फूल, ऐसे ही सदा मुस्कराते रहना।'' एक भाई के गले में कैमरा देख प्यारे बाबा ने स्वयं ही बीच में खड़े होकर हमारे साथ फोटो खिंचवाया। ज्यों ही फोटो खींचने का कार्य पूरा हुआ, तुरन्त ही बाबा ने सभी का ध्यान शिव बाबा की ओर खींच लिया, कहा कि इस शरीर का फोटो आएगा पर शिव बाबा का नहीं। कमरे में आकर इस्माइल भाई ने कहा - ''वास्तविकता साकार हो गई कि आदम खुदा नहीं पर खुदा के नूर से जुदा भी नहीं।''

अगले दिन बाबा ने एक-एक बच्चे के साथ झूला झूलते हुए सभी को अतीन्द्रिय आनन्द के शिखर पर पहुँचा दिया। रूहानी नशा उस समय असीम हो जाता था जब बाबा पूछते थे - ''बच्चे! किसके साथ झूल रहे हो?'' इन शब्दों के साथ संगमयुग और सतयुग की सर्वोच्च साकार हस्ती क्रमश: ब्रह्मा बाबा और महाराजकुमार श्री कृष्ण तथा सर्वोच्च निराकार पिता शिव - ये तीनों एक साथ जान पड़ते थे। बाबा के साथ बिताए हर दिन की रंगत नई होती थी, हर दिन उमंगों के पंखों पर आत्मन नई-नई उड़ान भरता था। ऐसी ही एक नवीन अनुभूति तब हुई जब बाबा ने कहा कि कल बच्चों ने भोजन बनाया और बाबा ने खाया पर आज बाबा भोजन बनाएगा और बच्चे खाएँगे। फिर बाबा ने अंगीठी पर गरम-गरम फुलका बनाकर उसमें माखन मिश्री डालकर एक-एक को गोद में बिठाकर मुख में खिलाया। सबकी आँखों से स्नेह-मोती झर रहे थे। इतना प्यार करेगा कौन? आखिर ब्रह्मा तो बड़ी माँ है ना! रात को गरम-गरम दूध पीकर हम विश्राम करने गए। दस बजे एक बहन सुगन्धित धूप जलाकर ले आई। उसी खुशबू के बीच फरिश्ता रूप बाबा पधारे। एक-एक बच्चे को निहारा कि नींद आई कि नहीं। कितना प्यार और दुलार दिया बाबा ने! क्या पालना दी, कैसे भूल सकते हैं? आखिर विदाई की घड़ी आ गई। प्यारे बाबा ने हमें अपनी ओर से एक टेप रिकॉर्डर भेंट स्वरूप दिया ताकि हम बाबा की आवाज में मुरली सुन सकें। बच्चों के पुरुषार्थ में उन्नति का बहुत बारीकी से ख्याल करते थे बाबा। 'गो सून, कम सून' अर्थात् 'जल्दी जाओ और जल्दी आओ' की मिश्री-बदाम देते समय प्यारे बाबा की आँखें भी भरी हुई थीं। रूमाल को हिलाते हुए उनके हाथ, हमारे दिल को भी हिला रहे थे। प्यारे बाबा ने कहा - ''सलाम मालेकुम!'' हमने भी उत्तर में कहा - ''मालेकुम सलाम''।

ईश्वरीय सेवा................पृष्ठ......02 का शेष

वे सांयकाल पत्रकार सम्मेलन के समय तक भी नहीं पहुँचे। तथापि हमने प्रैस वालों के लिए एक वक्तव्य बना रखा था। मुख्यमन्त्री के आवास के टेलीफोन नम्बर के कारण काफी पत्रकार आ गये थे। हमने उन्हें उस वक्तव्य की टंकित लिपि (Typed Copy) दे दी। वह वहाँ के मुख्य समाचारपत्र 'द हिन्दू' (The Hindu) तथा अन्य पत्रों में छप गई।

इसके बाद जब हम मुम्बई आये तो मुम्बई में भी पत्रकारों को बुलाया गया था। वहाँ 'टाइम्स ऑफ इन्डिया' का संवाददाता और 'फ्री प्रैस जरनल' (Free Press Journal) का संवाददाता भी स्टेशन पर आया था और दैनिक 'इन्डियन एक्सप्रेस' ने अपने एक स्थाई स्तम्भ में फोटो-सहित प्रैस-इन्टरव्यू (Press Interview) छापा था। इस प्रकार ईश्वरीय सेवा हो गई थी। कितनी भी कठिन परिस्थितियाँ होने के बावजूद भी ईश्वरीय सेवा के लिए बाबा ने सदा ही प्रोत्साहन दिया। बाबा हमेशा कहा करते कि ''बच्चे, पेट के भोजन के खर्च से भी बचाकर ईश्वरीय सेवा में लगाना चाहिए। इतनी प्रेरणा देते थे बाबा ईश्वरीय सेवा के लिए!

आदम और खुदा की अनोखी प्रेम कहानी

ब्रह्माकुमारी आरती, लागोस (अफ्रीका)

इस बात को 67 वर्ष गुज़र चुके हैं जब एक अनोखी प्रेम-कहानी की शुरूआत हुई। एक बूढ़े ब्राह्मण को एक संकल्प उठा, एक साक्षात्कार हुआ, 63 जन्मों की खोज का फल मिला उसे और उस खोज में वह समा गया। घर-द्वार, महल-माड़ी, बँगला-गाड़ी, रिश्ते-नाते, पत्नी-बच्चे यहाँ तक कि उसने अपना तन भी कर दिया उस किस्मत के निर्माता के हवाले। एक जूनून था उसकी आँखों में, नई दुनिया की शुरूआत का, स्थापना का।

लोगों ने काँटे बोए, तलवार बिछाई, पर वह चला ही कब था जमीन पर! उसे तो नशा था भगवान के संग उड़ने का और सारी दुनिया को अपनी बाहों में भरकर उड़ा ले जाने का! प्रेम था उसकी आँखों में निराला-सा। बहुत कम लोग जान सके उसे। एक माँ जैसे बच्चे को गर्भ में ले लेती है, ऐसे समा लिया उसने सर्वशक्तिवान को भृकुटि में! जन्मों की प्यास इस मिलन से बुझ गई। भर गए वे दोनों एक-दूसरे की बाहों में शशी और रजनी की तरह, एक तड़प उस मिलन से शान्त हो गई।

सर्वशक्तिवान को उसने अपना तन-मन-धन समर्पित किया, इससे भड़की पवित्रता की चिंगारी जो अग्नि बनते-बनते बढ़कर हवनकुण्ड में बदल गई। सारी सृष्टि के पावन होने का समय आ गया था। उनके पावन प्यार ने पवित्रता की ऐसी महान मशाल प्रज्वलित की जो घर-के-घर, स्त्री-पुरुष-बच्चे-धन-दौलत सहित उस यज्ञ में स्वाहा होने के लिए लालायित हो उठे। पतित पावन कौन? यह प्रश्न उठा। साजन अविनाशी तो उसकी सजनी भी वैसी ही चाहिए। साजन परमपवित्र पतितपावन सर्व सीताओं का एक राम परमात्मा है तो उसकी सजनी कैसी हो? एक शान्त सरोवर, एक ज्ञान-मान सरोवर जो उस अग्निस्वरूप के प्यार को झेल सके, एक शीतल गऊ जो माँ का रूप धारण कर सके, एक प्यार का आँचल जो बच्चों को अपने पल्लव से ढक सके। एक माँ, एक ममता का शिखर जिस पर चढ़ कर लोग सूरज को अच्छी तरह देख सकें। ऐसे ढल गया वह अपने प्रियतम के रंगों में। प्रेम के अविनाशी रस का ऐसा रूहानी नशा चढ़ा था कि उसके दैहिक बच्चे भी उसी रस को पीने दौड़ पड़े।

एक छोटी मण्डली से शुरूआत हुई इंद्रसभा की। किसको पता था कि देवताओं का जन्म होने वाला है। सत्संगों में तो केवल मंत्रजाप, पूजापाठ होता है पर यह क्या? लोगों के मन में प्रश्न उठते और वे दौड़ पड़ते उस मण्डली की ओर। और वह अविनाशी पिता अपने बिछड़े बच्चों को, अविनाशी संतानों को पहचान लेता, अपना बना लेता। कैसा दिव्य परिवार था! दो होते भी जैसे वे दोनों एक थे। भगवान और उसके भाग्यवान ने विश्व की पहली प्रवृत्ति की नींव लगाई और प्रारम्भ हुई शिव और ब्रह्मा की अनोखी प्रेम-कहानी।

वह जौहरी था, परखशक्ति अपार थी रत्नों की। परमात्मा ने उसे इसलिए ही चुना, इसलिए ही अपना रथ बनाया। जिसने भगवान की अव्यभिचारी भक्ति कर भक्ति मार्ग की शुरूआत की थी, उसे ही हक था कि वह भगवान को अपना तन भी दे। कइयों ने समझा, कुछ संग चले और न जाने कितने ही विश्वास के झूले पर चढ़ने से पहले ही उतर गए। विनाशी दुनिया की विनाशी वस्तुओं का मोह तोड़ना तो उसके देहधारी गुरुओं ने भी सिखाया था परन्तु निज को पहचान कर श्रेष्ठतम् लक्ष्य विष्णु चतुर्भुज की ओर चलने की समझ केवल परमात्मा ने ही उसे दी। लक्ष्य

अनोखा और निराला तो था परन्तु भगवान स्वयं लक्ष्य का खुलासा देने लगे थे। यह खुलासा दुनिया के आज तक के सभी मूल्यों, तथ्यों, धर्मों, जीवन शैली, भक्ति, परमात्मा की पहचान एवं ज्ञान-विज्ञान आदि का सार प्रस्तुत कर रहा था।

इस सत्य का कइयों ने प्रतिरोध किया, विरोध किया, कुछ उसके जानलेवा भी हो गए परन्तु वह न रुका, न डरा। ईश्वर की इस प्रथम रचना को यह विश्वास गहराता गया कि उसका तन-मन-धन भगवान शिव के पास सदाकाल के लिए धरोहर के रूप में है। इस सच्चे अर्जुन का युद्ध यह था कि वह कैसे दुनिया में रहते हुए ईश्वर के दिए लक्ष्य से अपना प्यार बाँधे और आदिकालीन देवत्व की स्मृति और स्थिति में लौट आए। वह प्रजापिता बन गया। उसने सारी सृष्टि की प्रजा को, चाहे साधु-संन्यासी, नौकर-चाकर, राजा-मालिक, राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री, माता-कन्या, बालक-युवक कोई भी हो, अपनी वंशावली बना लिया। आदम की कहानी हर ग्रन्थ में मशहूर है। परमात्मा ने ज्ञान की फूँक से मृत्यु तुल्य जीवन को, चैतन्य आत्मा की पहचान देकर देवता बनने के लिए तैयार किया परन्तु पुराणों, ग्रंथों-शास्त्रों में रहस्यमय तरीके से वर्णित इस निराले विषय को, इस अनोखी बात को न कोई जान सका, न समझ सका, न देख सका।

आदम से शुरूआत हुई नई सृष्टि की। परमात्मा ने उसका नाम ब्रह्मा रखा इसलिए शास्त्रों में गायन है कि ब्रह्मा द्वारा परमात्मा ने नई सृष्टि की रचना की। वही सृष्टि-रंगमंच का पहला रंगकर्मी है, वही ईश्वर की पहली संतान बना। उस आत्मा द्वारा ही परमात्मा ने अगम-निगम के सारे भेद खोले हैं और हर आत्मा के स्वदर्शन चक्र अर्थात् सृष्टि-चक्र में उनके सत्य पार्ट को स्पष्ट किया है। 'निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी' परमात्मा पिता को साकार तन में धारण करने वाला साकार मनुष्य ही प्रजा का पिता बना, उसी का नाम प्रजापिता ब्रह्मा पड़ा।

मानव को देवपद प्रदान कर देना - यही परमात्मा के श्रेष्ठ कर्त्तव्य की महिमा है। तमोप्रधान पतित मनुष्यात्माओं को वे ज्ञान-लहरियों द्वारा पावन बनाते हैं। पानी की नदियाँ तो अनेक हैं जिनमें करोड़ों मनुष्य पाप धोने जाते हैं परन्तु केवल जल से ही शुद्ध होने की क्रिया सम्पूर्ण हो जाती, तो आज कर्मों के फल इतने प्रबल और भयानक क्यों होते ?

हम सृष्टि-चक्र का दर्शन हर समय करते हैं पर हम स्वयं भी चक्र में हैं, यह भान शायद ही किसी मनुष्य को होता है। लक्ष्य को समझना अर्थात् उस बिन्दु को समझना जहाँ से चक्र का प्रारम्भ होता है। चक्र अनादि है, फिर भी अर्धनारीश्वर की जो गाथा है वह सिद्ध करती है कि कैसे संगमयुग पर खड़ी आत्मा को, 84 जन्मों में से आधे नारी एवं आधे पुरुष जन्मों का भान होता है। चक्र के अंत में आत्मा, नर-नारी दोनों की दिव्यता को लेकर सम्पूर्ण आत्मिक स्वरूप में स्थित हो देवता बनती है। मनुष्य का अधूरापन निकल जाता है और परमात्मा के दिए लक्ष्य पर, चाहे पुरुष या स्त्री, दानों ही अपने को आत्मा निश्चय कर सम्पूर्ण देवता स्वरूप की ओर अग्रसर होते हैं।

यदि हमें अपना कल्याण करना है तो परमात्मा के अवतरण की गुत्थियों को समझना अति आवश्यक है।परमात्मा पिता हर 5000 वर्ष (एक कल्प) के बाद, कलियुग और सतयुग के संगम पर आते हैं। वे तभी ब्रह्मा की आत्मा को विष्णु बनने का लक्ष्य देते हैं। ब्रह्मा ही गीता ज्ञान द्वारा विष्णु बन नए युग की पुनरावृत्ति करते हैं। विष्णु ही 84 जन्म लेते-लेते अंतिम जन्म में फिर ब्रह्मा बनते हैं इसलिए चित्रों में दिखाया है कि विष्णु की नाभि से ब्रह्मा निकला। पर नाभि कौन-सी ? नाभि है परमात्मा शिव

द्वारा संगमयुग पर दिया गया पवित्र गीता ज्ञान जो ही ब्रह्मा को जन्म देता है।

भले ही आध्यात्मिकता के अंतरंग पहलुओं पर कई विद्वान, शास्त्रज्ञ, तत्वज्ञानी जन्म-जन्मान्तर तक प्रश्न उठाते रहे हैं फिर भी परमात्मा के अवतरण का सत्य किसी ने नहीं जाना। उनके अवतरण तक सृष्टि के किसी भी राज़ का अनावरण नहीं हो सकता, यह एकमेव, अविचल सत्य है।

जीवन के प्रारम्भ से ही, मनुष्यात्मा केवल एक ही विषय की खोज में रही है - वह है शान्ति। प्रक्रिया कोई भी हो, रास्ता कोई भी हो, प्रयोग कोई भी हो, कर्म कैसा भी हो, शान्ति एवं सुख, ये दो बातें ही उसे खींचती हैं। शान्ति प्राप्ति का पदम भाग्य वर्तमान समय मनुष्यात्माओं के समक्ष उपलब्ध है यदि वे शान्तिदाता, गुणदाता, वैभवदाता, शक्तिदाता, सर्वज्ञ, सर्वोच्च परमात्मा पिता को पहचान लें और उनसे गहरा संबंध स्थापित कर लें। शिव के सत्य परिचय से अनन्त सुख की प्राप्ति होती है और प्रेम का दरिया बह उठता है। परमशिक्षक का दिव्य शिष्य बनने वाला न जाने कितनी उपाधियों से विभूषित हो जाता है। उस श्रेष्ठ प्रियतम के संग से, आत्मभान में स्थित आत्मा सदा सुहागिन-सी सज जाती है। देखिए और जानिए कि आज सर्व को मुक्ति और जीवनमुक्ति देने वाले दाता, सतगुरु, रुद्र भगवान की श्रेष्ठ मत पर चल अनेक आत्मा रूपी सीताएँ, सुख-शान्ति भरी पावन दुनिया की ओर अग्रसर हो रही हैं। ✱✱✱

कल्प-पुरुष

– ब्र.कु. देवीचन्द कौशिक, उत्तमनगर (दिल्ली)

धर्मपिता, महापुरुष, महात्मा, संत अनेकों आये।
बहुत युक्तियाँ रची, विकार, जीवन से नहीं मिट पाये।।

प्यारे बाबा तुमने किया, आत्मा में उजियारा।
घर को आश्रम, कमल-सा जीवन, पावन-न्यारा-प्यारा।।

शूद्रों को नवजीवन देकर, ब्राह्मण उन्हें बनाया।
धर्म, धाम, स्वरूप, लक्ष्य का सच्चा ज्ञान कराया।।

बाबा! आदम, एडम एवं ब्रह्मा नाम तुम्हारे।
तेरे मुख से छोड़ी शिव ने, जग में ज्ञान फुहारें।।

आदि देव तू महावीर, नन्दीगण प्यारा-प्यारा।
अपने गऊ-मुख में ले आया, ज्ञानामृत की धारा।।

ग्रेट-ग्रेट ग्राण्ड फ़ादर, मानव का भाग्य विधाता।
विधि-विधान, जीवन दर्शन, तू मानव को समझाता।।

कल्प-चक्र में गुंथी हुई है, तेरी दिव्य कहानी।
देव-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र, शिवभक्त और महादानी।।

नर-माता बन करके तूने, रच दी सृष्टि सारी।
काँटे फूल बनाये, हाथों से बगिया श्रृंगारी।।

प्रथम पुरुष तू जन-मन भावन, सुन्दर-सुखद सलोना।
तूने पावन बना दिया, जीवन का कोना-कोना।।

नित-नित सींचा निज हाथों से, चेतन, दिव्य बगीचा।
सुगन्ध भर कर हमें बनाया, जग में सबसे ऊँचा।।

▼◆▼

पवित्र धन और सतयुगी महाराजाओं का कारोबार

ब्रह्माकुमार रमेश, गामदेवी (मुम्बई)

वर्तमान युग में, सतयुग की श्रेष्ठतम राज्य व्यवस्था को रामराज्य के नाम से जाना जाता है। इस श्रेष्ठतम राज्य व्यवस्था में सम्पूर्ण सुख-शान्ति और आनन्द का अनुभव हरेक को होता था।

आबू पर्वत पर जब विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय का निर्माण हो रहा था तो कई बार अव्यक्त बापदादा के साथ सन्देश की लेन-देन हुई। प्यारे बाबा ने बताया कि सतयुग में राजा, जीते जी राज्य कारोबार अपने राजकुमार को सौंपकर सेवा-निवृत्त हो जाएगा। प्यारे बाबा की पधरामणी संग्रहालय में जब हुई तब भी उन्होंने स्पष्ट किया कि आज के संसार में, राजतिलक (Coronation) के बाद एक राजा, जीवन के अन्त तक राजगद्दी पर ही रहता है। उसके शरीर छोड़ने से पहले, उसके उत्तराधिकारी का नाम तो घोषित हो जाता है परन्तु यह घोषित उत्तराधिकारी, उसकी मृत्यु के बाद ही गद्दी पर बैठता है इसलिए यह कहावत प्रचलित है - Long live the king. The King is dead. (राजा आयुष्वान हो, राजा परलोक सिंधार गया) इसमें नए राजा को आशीर्वाद दिया है और पहले वाले राजा की मृत्यु की घोषणा है। लेकिन इस प्रकार की प्रथा में कई प्रकार की त्रुटियाँ हैं, जैसे कि राजा की आयु लम्बी होने के कारण उसका उत्तराधिकारी भी आयु में काफी बड़ा हो जाता है। उदाहरण के लिए, इंगलैंड की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय इस समय गद्दी पर हैं और उनका बेटा राजकुमार चार्ल्स भी काफी आयु का हो चुका है। महारानी विक्टोरिया ने भी 93 वर्ष की आयु में शरीर छोड़ा था। तब उसका 67 वर्षीय बेटा गद्दी पर आया था। इतनी बड़ी आयु में राजा बनने वाले के मन में कोई विशेष उमंग-उत्साह नहीं रहता है। मुगल-काल में भी अकबर की आयु लम्बी होने के कारण उसके बेटे जहांगीर तथा पोते खुसरो में राजगद्दी के लिए झगड़ा हुआ। इस पर जहांगीर ने बेटे (खुसरो) को मारकर गद्दी हथियाई।

सतयुग में इससे भिन्न प्रथा है। वहाँ राजा, जीवन के अन्त तक कारोबार नहीं सम्भालता बल्कि वयस्क पुत्र को स्वयं राजतिलक देकर राज्य कारोबार से निवृत्त हो जाता है। वहाँ पुरोहित आदि नहीं होते इसलिए राजा स्वयं यह कार्य करता है और पुत्र का आधारस्तम्भ बनकर, न्यारा रहकर भी राज कारोबार के अटल, अखण्ड, निर्विघ्न रूप से चलने में मददगार बनता है। प्रजा के कल्याण की तरफ उचित ध्यान देता है।

सतयुग में होने वाले हर विधि-विधान का प्रारम्भ संगमयुग से ही होता है। इसके प्रमाण के रूप में, इस वर्ष मुख्य बहन-भाइयों को श्रीमत देते हुए प्यारे बाबा ने कहा कि ये डायलॉग, सम्मेलन, मेले आदि करने वाले तो नए-नए बहन-भाई तैयार हो गए हैं, आप ईश्वरीय सेवा की तथा दैवी परिवार में उमंग-उत्साह बढ़ता रहे, इसकी नई योजनाएँ बनाओ। अपने से छोटों को प्रशिक्षित करने तथा उनका मार्गदर्शन करने की यह जिम्मेवारी सतयुगी राज कारोबार में भी संस्कार रूप में काम आएगी।

बिना पूर्व अनुभव के और उचित मार्गदर्शन के, अचानक ही कोई जिम्मेवारी मिलती है तो कई बार दुर्घटना हो जाती है। भारत जब आजाद हुआ तो उसके बाद दंगे हुए तथा भारत की पुलिस, मिलट्री तथा गृह-मन्त्रालय तीनों ने उनको नियन्त्रित करने में असमर्थता जाहिर की। तब नेहरू जी ने आपातकालीन बैठक

बुलाई जिसमें निर्णय लिया गया कि लॉर्ड माउंटबेटन को सत्ता सौंपी जाए। ऐसा ही किया गया। लॉर्ड माउंटबेटन ने दूसरे महायुद्ध में संयुक्त सेनाओं के मुख्य कमाण्डर के रूप में कार्य किया था। नेहरू जी ने कहा कि हम तो सारा जीवन आजादी की लड़ाई लड़ते रहे, जेलों में रहे इसलिए वर्तमान परिस्थिति से निपटने का अनुभव हमारे पास नहीं है। माउंटबेटन ने 7 दिन में परिस्थिति को नियन्त्रण में ले लिया।

प्यारे बाबा, सतयुग में इस प्रकार की स्थिति न बने, इसके लिए हर बच्चे को हर श्रेष्ठ बात में अनुभवी देखना चाहते हैं। प्यारे ब्रह्मा बाबा को अव्यक्त करने के पीछे भी शिव बाबा की यही अनुभवी बनाने की योजना थी। सन् 1969 के 21 जनवरी के महावाक्यों में प्यारे बाबा ने कहा कि ज्ञान-सूर्य और ज्ञान-चन्द्रमा की रोशनी में सितारों की रोशनी गुप्त रहती है परन्तु अब ज्ञान-सितारों के प्रत्यक्ष होने का समय ड्रामा में है इसलिए ज्ञान-चन्द्रमा (ब्रह्मा) को ओझल किया गया है।

सन् 1968 में मैंने प्यारे बाबा से कहा कि दादी प्रकाशमणि जी तो गामदेवी सेवाकेन्द्र की संचालिका हैं और आपने उनको मुख्य प्रशासिका बना दिया पर प्रशिक्षण तो दिया नहीं। इस पर बाबा ने कहा - ठीक है बच्चे। इसके कुछ समय बाद, अव्यक्त होने से लगभग 3-4 मास पहले, प्यारे बाबा ने दादी जी को लगभग दो या ढाई मास अपने साथ मधुबन में रखा और सब प्रकार का प्रशिक्षण जैसे दे दिया। बाबा द्वारा स्थापित प्रशिक्षण का यह सिलसिला अब भी जारी है। प्रशासनिक कार्यों से उपराम होकर अब दादी जी नित नई सेवा-योजनाएँ, बाबा की प्रेरणा से प्रस्तुत करती हैं जिनसे सर्व में उमंग भरता है और ईश्वरीय कार्य को तीव्र गति मिलती है।

लौकिक दुनिया में व्यक्ति 58 या 60 वर्ष की आयु में सेवा-निवृत्त होता है परन्तु वहाँ कमी यह रह जाती है कि वह उत्तराधिकारियों को अपने अनुभवों से अनुभवी नहीं बनाता है। इस कारण कार्य में दक्षता तथा सन्तुष्टि का अभाव रहता है। प्रजातन्त्र प्रणाली में राजाध्यक्ष भी 5,5 वर्ष में बदल जाते हैं और चुनाव के द्वारा कई बार अनुभवहीन व्यक्ति भी राजाध्यक्ष बन जाते हैं। भारत में लगभग 429 सांसद तथा विधायक ऐसे हैं जिनकी पृष्ठभूमि अपराध आधारित है। विदेश में भी ऐसा है। मैक्सिको का एक राष्ट्रपति गद्दी पर आया तो साधारण था परन्तु सत्ताच्युत किया गया तब वह विश्व के पहले 10 धनी व्यक्तियों में छठे नम्बर पर था। फिलिपीन्स के राजाध्यक्ष को भी उसके काले कारनामों के कारण गद्दी से उतारा गया। सद्दाम हुसैन के साथ भी ऐसा ही हुआ। इस प्रकार, रक्षक ही भक्षक बनने से राज्य संचालन का कार्य कठिनाइयों से भरा रहता है परन्तु सतयुगी सतोप्रधान दुनिया में यह कार्य सुखद अनुभूति कराने वाला होगा जिसकी नींव, प्यारे बाबा की दूरदर्शिता के द्वारा अभी डाली जा रही है।

दृढ़ संकल्प

हमारे नित्य प्रति के विचार, आकांक्षाएँ और नये ताजे संकल्प भी ताजा फलों के समान हैं। हमें चाहिए कि उनके ताजा रहते हुए ही उनका उपयोग करें ताकि उनसे शक्ति प्राप्त हो। बासी होने से तो उनके बहुत से गुण और उपयोग खत्म हो जाते हैं। बड़ा काम करने का इरादा तो कोई भी कर सकता है परन्तु उसको कार्य रूप में, सशक्त, दृढ़ चरित्र बल वाले व्यक्ति ही लाते हैं। अपने नेक इरादों को टालने की आदत मानव के आगे बढ़ने के गुण को नष्ट कर देती है। कर्म करने से पूर्व एक जबरदस्त, दृढ़ संकल्प कर लीजिए कि मुझे आदर्श बनना ही है। सदा अपने ऊपर विश्वास रखें। परमात्मा भी उसी को मदद करता है जिसमें आत्म विश्वास हो।

राजधानी में फैली शान्ति की लहर

देहली, 7 दिसम्बर। भारत की राजधानी देहली में, नेहरू स्टेडियम में आयोजित विशाल 'शान्ति उत्सव' में एक ओर जहाँ आध्यात्मिक शक्तियों की चैतन्य प्रकाशपुञ्ज राजयोगिनी ब्रह्माकुमारियाँ थीं वहीं दूसरी ओर भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, अनेक मन्त्री तथा विशिष्ट जन भी उपस्थित थे। तीसरी ओर, भारत तथा विदेश के लगभग एक लाख लोग भी समारोह की शोभा बढ़ा रहे थे।

महामहिम राष्ट्रपति भ्राता ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने कहा कि अध्यात्म से शान्ति हो सकती है परन्तु बीच में विकास की बात आती है। उन्होंने कहा कि धर्म में अध्यात्म के समावेश से ही सत्यता आती है, मैंने राजयोग की शक्ति को प्रत्यक्ष अनुभव किया आबू पर्वत पर जाकर। वहाँ राजयोग, सात्विक भोजन तथा हल्के व्यायाम के द्वारा हृदय रोगों से सफलतापूर्वक मुक्ति दी जा रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि जब दिल में शान्ति होती है तो चरित्र सुन्दर बन जाता है, सुन्दर चरित्र से घर में सद्भावना हो जाती है। जब घर में सद्भावना होती है तो देश में व्यवस्था बनी रहती है, इससे फिर विश्व में शान्ति स्थापित होती है।

भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम भ्राता भैरों सिंह शेखावत जी ने कहा कि यह निर्णय मानव को स्वयं करना है कि वह शान्ति की राह पर चलकर भला कर सकता है या अशान्ति की राह पर चलकर। तनाव जीवन में नहीं आएगा यदि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना रखेंगे और शान्ति को जीवन का ध्येय बनाएँगे। उन्होंने निजी अनुभव का वर्णन करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारियों के जीवन में त्याग भाव और तप को देखकर मुझे शान्ति मिली है। उन्होंने जनता का आह्वान किया कि वे ब्रह्माकुमारियों की जीवनचर्या की ओर देखें, इन्होंने त्याग के पथ पर चलकर भारत तथा विदेशों में गली-गली में जाकर शान्ति का सन्देश दिया है और शान्ति की दूत बनी हैं।

सी.बी.आई. के पूर्व निदेशक भ्राता कार्तिकेयन जी ने कहा कि इस विद्यालय की सबसे बड़ी विशेषता, जो मैंने कई वर्षों के सम्पर्क से जानी है, यह है कि यहाँ बड़ों से लेकर छोटों तक सभी में त्याग और तप की भावना कूट-कूट कर भरी है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा। शान्ति का अर्थ केवल संघर्ष की समाप्ति नहीं बल्कि जीवन में सन्तुष्टता तथा खुशी भी होनी चाहिए।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने सभी का आह्वान करते हुए कहा कि आओ, हम अशान्ति के सर्व कारणों का निवारण कर भारत के प्राचीन मूल्यों को जन्म दें, हम परमात्मा से वायदा करें कि हम शान्ति तथा प्रेम से रहेंगे।

हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता बाबू परमानन्द जी ने कहा कि वर्तमान समय ब्रह्माकुमारी संस्थान ही एक मात्र आशा की किरण है जिसमें राजयोग की शिक्षा से आत्मा को परमात्मा से जोड़ा जा रहा है। इस मिलन से ही सच्ची शान्ति प्राप्त हो सकती है। उन्होंने कहा कि आपके आन्दोलन पर मुझे पूरा विश्वास है, आपका यह योगदान विश्व के लिए बहुत बड़ा है।

राजयोगिनी दादी जानकी जी ने कहा कि 12 मूल्य और 8 शक्तियाँ जीवन में आ जाएँ तो शान्ति गले का हार बन सकती है। उन्होंने कहा कि शान्ति पैसे से नहीं मिलती इसके लिए सेकेण्ड में अन्दर जाओ और फिर ऊपर (परमधाम) चले जाओ।

'शान्ति उत्सव' से एक दिन पहले राष्ट्रपति महोदय ने मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि सहित लगभग 200 वरिष्ठ ब्रह्माकुमारियों तथा ब्रह्माकुमारों के साथ स्नेह-मुलाकात राष्ट्रपति भवन में की। इस मुलाकात में उन्होंने अध्यात्म पर प्रश्न-उत्तर किए। भारत के 80 करोड़ लोगों ने 'शान्ति उत्सव' जीवन्त प्रसारण दूरदर्शन द्वारा देखा और 80 देशों में भी इसका जीवन्त प्रसारण हुआ। इस प्रकार, अनेक आत्माओं के स्नेह, सहयोग तथा दुआओं को अपने में समाए हुए यह सुखद दृश्य, कल्प पूर्व की तरह पुनः सृष्टि नाटक की रील में लिपट गया।


1


2


3


4


5


6


7



8


9

1. गुलबर्गा- सामाजिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नगरेश्वर सोसायटी के कार्यदर्शी भ्राता रवि मुक्का, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. प्रेम भाई तथा अन्य । 2. मालाड (लिबर्टी गार्डन)- निःशुल्क नेत्र शिविर का उद्घाटन करते हुए सुप्रसिद्ध डॉ. नटराजन जी, मॉडल टी.वी. फिल्म कलाकार रूबी भाटिया जी, ब्र.कु. दिव्या बहन, ब्र.कु. कुन्ती बहन, रोटरी क्लब अध्यक्ष डॉ. भ्राता विनोद सिरोया तथा अन्य । 3. रीवा- केसरवाणी महिला समाज की अध्यक्षा बहन गुप्ता जी, सचिव बहन कल्पना गुप्ता जी, प्रो. स्नेहलता तिवारी, ब्र.कु. निर्मला बहन, ब्र.कु. सावित्री बहन तथा अन्य, महिला सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए । 4. पानीपत- शिक्षाविद् सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आर्य महाविद्यालय के प्राचार्य भ्राता के.एल. मिगलानी, आई.बी. महाविद्यालय के प्राचार्य भ्राता के.सी. चौधरी, प्राचार्या बहन सविता बवेजा, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. भारत भूषण जी तथा अन्य । 5. इन्दौर (सुदामा नगर)- राजयोग अनुभूति शिविर का उद्घाटन करते हुए अहिल्या देवी विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति भ्राता ए.ए. अब्बासी.जी., हि.प्र. ब्र.कु. आस्था बहन तथा ब्र.कु. दामिनी बहन । 6. जमशेदपुर- टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी के टाउन डिवीजन के महाप्रबन्धक भ्राता संजीव पौल को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. अंजू बहन । 7. भैरहवा (नेपाल)- ज़िलाधिकारी भ्राता दीपक कुमार जोशी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शान्ति बहन तथा ब्र.कु. भूपेन्द्र भाई । 8. काकटपुर (उड़ीसा)- नवनिर्मित विश्वकल्याणी भवन का उद्घाटन करती हुईं राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी । साथ में ब्र.कु. लीला बहन,ब्र. कु. पार्वती बहन तथा अन्य । 9. सरकाघाट- सेवाकेन्द्र के शिलान्यास समारोह के मंच पर विराजमान हैं सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक भ्राता मोहनलाल, ब्र.कु. नरेन्द्र भाई, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. शीला बहन, ब्र.कु. रानी बहन तथा ब्र.कु. प्रेम बहन ।

















1. राजकोट- मधुमेह नियन्त्रण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मेडिकल कॉलेज के डॉ. भ्राता अग्रवाल जी, लायन्स क्लब अध्यक्ष डॉ. भ्राता दीपक भाई पटेल, डॉ. भ्राता जीतेन्द्र भाई पटेल, ब्र.कु. भारती बहन तथा ब्र.कु. गिरीश पटेल भाई । 2. फर्रुखाबाद- मानस सम्मेलन में विचार व्यक्त करती हुई ब्र.कु. आशा बहन । 3. घरौंडा (हरियाणा)- पावनधाम भवन के शिलान्यास अवसर पर उपस्थित हैं विधायक भ्राता रमेश राना जी, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. लक्ष्मण भाई तथा अन्य । 4. अबोहर- विधायक भ्राता सुनील कुमार जाखड़ तथा अन्य को आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाती हुई ब्र.कु. पुष्प बहन । 5. चिखली- आध्यात्मिक कार्यक्रम के उद्घान के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं विधायिका भारती बहन पटेल, दूध डेयरी के प्रबन्धक भ्राता सिंह साहब, ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. नाथा भाई तथा अन्य । 6. फतेहगढ़ चूड़ियां (अमृतसर)- अध्यक्ष भ्राता परवीन कुमार तथा अन्य को आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाती हुई ब्र.कु. नर्मदा बहन । 7. गोरखपुर- ज़िला कारागार में आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जेल अधीक्षक भ्राता वी.के. जैन, अपर ज़िला अधिकारी, ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा अन्य । 8. कपूरथला- समाज सेवा में सहयोग देने पर ब्र.कु. लक्ष्मी बहन को सम्मानित करते हुए पंजाब नेशनल बैंक के क्षेत्रीय महाप्रबन्धक भ्राता उदय शंकर भार्गव ।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : shantivan@bkedu.net (Ph. No. (02974)- 228125, 228126 gyanamrit@vsnl.com

















1. **भांडुप-** राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी को स्मृतिचिन्ह भेंट करते हुए व्यापारी मंडल के अध्यक्ष भ्राता नानजी भाई, ब्र.कु. भ्राता महाजन जी, विधायक भ्राता तारा सिंह जी, ब्र.कु. गोदावरी बहन तथा ब्र.कु. लाजवन्ती बहन। 2. **मुम्बई-** समाज सेवा प्रभाग की ओर से आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र के पूर्व मन्त्री भ्राता गणेश नाइक, बेलापुर संगठन के अध्यक्ष भ्राता दिनेश पारिख, ब्र.कु. सन्तोष बहन, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, ब्र.कु. प्रेम भाई तथा ब्र.कु. अवतार भाई। 3. **शान्तिवन (आबू रोड)-** ढाका के पूर्व नवाब तथा रोटरी क्लब अध्यक्ष भ्राता सुल्तान महमुदुर रहमान, शान्तिवन अवलोकन के बाद ब्र.कु. निर्वैर भाई के साथ। ब्र.कु. जोनाली बहन, ब्र.कु. डॉ. सतीश गुप्ता, ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल, ब्र.कु. डॉ. प्रेम मसंद तथा अन्य भी साथ में हैं। 4. **मुम्बई (डोंबिवली)-** महाराष्ट्र के जनकल्याण मन्त्री भ्राता बाबा साहेब शिवलकर जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. तेजा बहन। 5. **बलिया-** आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के नगर विकास राज्यमन्त्री भ्राता नारद राय जी। 6. **पूना (खडकी)-** महाराष्ट्र के ग्राम विकास राज्यमन्त्री भ्राता बसवराज पाटिल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. भारती बहन। 7. **बदायूँ (उ.प्र.)-** राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए वित्त राज्यमन्त्री भ्राता विमल कृष्ण अग्रवाल, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा ब्र.कु. करुणा बहन। 8. **रिवाड़ी-** हरियाणा के स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता एम.एल. रंगा के साथ ज्ञान-चर्चा करती हुई ब्र.कु. दर्शन बहन।



Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month

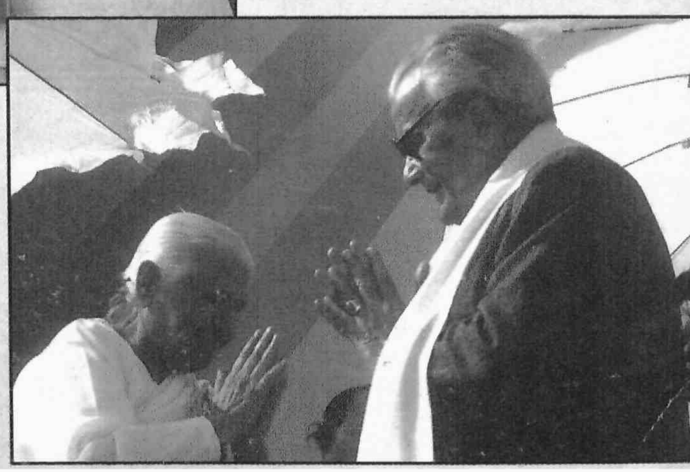
नई देहली- नेहरू स्टेडियम में आयोजित शान्ति उत्सव का उद्घाटन करते हुए भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, गृह राज्यमन्त्री भ्राता आई.डी. स्वामी जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी तथा अन्य।



नई देहली- भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम भ्राता भैरोंसिंह शेखावत जी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन तथा अन्य, नेहरू स्टेडियम में आयोजित शान्ति उत्सव के प्रात:कालीन सत्र का उद्घाटन करते हुए।



नई देहली- भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी।



नई देहली- भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम भ्राता भैरोंसिंह शेखावत जी का शाल ओढ़ा कर अभिनन्दन करती हुई राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी।